सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 208, नई दिल्ली । सोमवार, 07 अक्टूबर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 सीता की विदाई व राम बनवास की लीला देख आंखें हुई नम
06 मनोविज्ञान मानसिक स्वास्थ्य से परे विविध कैरियर अवसर...
08 केंद्र कोयला बकाया दे दे तो हम तीन-तीन लाख रू महिलाओं में बांट देगें : हेमंत सोरेन

परिवहन विभाग बिना पूर्व सूचना के क्यों बंद कर रहा है अपने क्षेत्रीय कार्यालय/ शाखाएं

संजय बाटला

नई दिल्ली। आप सभी जानते हैं की परिवहन विभाग द्वारा बिना किसी पूर्व सूचना/ बिना अधिकृत प्रक्रिया अपनाए अब तक दिल्ली में गैजेट नोटिफिकेशन द्वारा जनहित में शुरु किए गए 7 (सात) क्षेत्रीय कार्यालय/ शाखाएं बंद कर चुका है। आप की जानकारी हेतु बता दें अधिकृत रूप में आज भी दिल्ली में 13 (तेरह) क्षेत्रीय कार्यालय/ शाखाएं चल रही है। अब परिवहन विभाग द्वारा आम आदमी के लिए जनहित कार्यालयों/ शाखाओं के बाद व्यवसायिक गतिविधियों में दिल्ली में चलने वाले वाहनों से सम्बन्धित कार्यालयों को बिना बताए बंद करने की तरफ अपना कदम उठाया है जो दिल्ली की जनता के लिए असुरक्षा के तरफ बड़ा कदम है। आपकी जानकारी हेतु बता दे पंजीकृत व्यवसायिक वाहनों को मोटर वाहन नियम के अनुसार अपने वाहनों की समयानुसार जांच करवाकर जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करना अनिवार्य है। **दिल्ली परिवहन विभाग ने बिना जांचे, बिना नियम और कानून को जाने एक कम्पनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के द्वारा जारी एक दिशा निर्देश का नाम लेकर बिना यह जाने की एटीएस में समय**

सीमा के तहत एक दिन में कितने वाहनों की जांच की नियमानुसार इजाजत है और ऐसे कौन से व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल वाहन है जो एटीएस पर जांच के दायरे से बाहर है को बिना किसी पूर्व सूचना के बुराड़ी वाहन जांच केंद्र से हटाकर झुलझुली स्थानांतरित करने के दिशा निर्देश जारी कर दिए जिसके खिलाफ़ वाहन मालिकों ने इसका विरोध जताया और लिखित में मांग करी है की तत्काल प्रभाव से बुराड़ी वाहन जांच केंद्र से जिन वाहनों को हटाकर झुलझुली वाहन जांच केंद्र में भेजा है उसे वापिस बुराड़ी में भेजा जाए। विरोध करने वाले वाहन मालिकों द्वारा वाहन निरीक्षण सेंटर का स्थानांतरण रद्द करने और स्थानानंतरण के नोटिफिकेशन आदेश की प्रतिलिपि की मांग भी की है। इस स्थानांतरण से लगभग 50 हजार लोगों का रोजगार प्रभावित होने के साथ ट्रांसपोर्टर के हित भी प्रभावित हो रहे हैं। ट्रांसपोर्टर्स ने आरोप लगाया कि झुलझुली में उनसे दोगुनी चौगुनी फीस लेकर उनकी गाड़ी पास की जा रही है। वहां पर धमकी दी जाती है कि ज्यादा बोला तो मारकर खेत में फेंक देंगे। ट्रांसपोर्टर्स ने आरोप लगाया कि वाहन निरीक्षण सेंटर का स्थानांतरण एक ऐसी प्राइवेट कंपनी को लाभ पहुंचाने के लिए किया गया है, जिसका टेंडर खत्म हुए भी जमाना बीत गया है। झुलझुली में जांच के लिए ऑटोमेटिक मशीनें जिस कंपनी की लगी हैं, उसका एग्रीमेंट भी समाप्त हो चुका है। इस कंपनी को आर्थिक लाभ पहुंचाने के लिए विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम ने अपने प्रभाव का दुरुपयोग करते हुए एग्रीमेंट समाप्त हुई मशीनों को एक्सटेंशन दे दिया है। ट्रांसपोर्टर्स का यह भी कहना था कि व्यवसायिक वाहनों में से तीन पहिया सवारी वाहन,

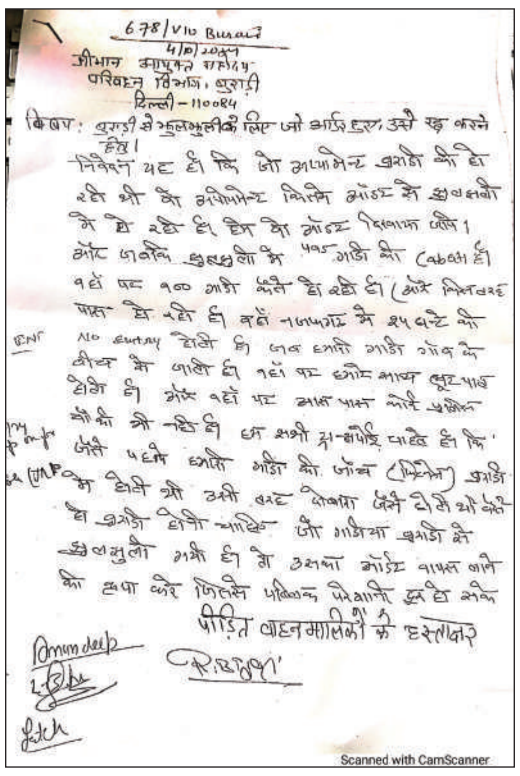

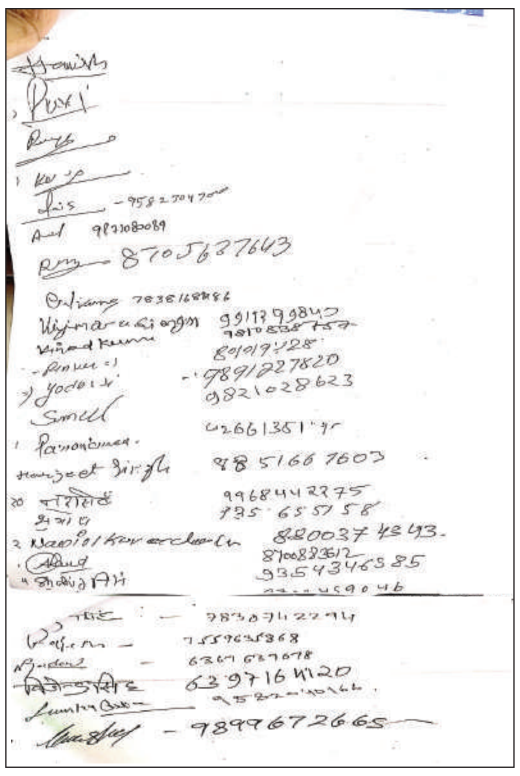

इलेक्ट्रिक वाहन, गाबेंज वाहन, बिना परमिट वाले वाहन और क्रेन ऑटोमेटिक जांच मशीन पर जांच के दायरे में नहीं आते, एक प्राइवेट कंपनी को उपकृत करने के लिए ऐसे वाहनों को भी झुलझुली जाकर ऑटोमेटिक जांच करवाने का तुगलकी फरमान जारी किया गया है। विरोध करने वाले वाहन मालिकों ने कहा की 50 हजार लोगो का रोजगार और उत्पीड़न से बचने के लिए जंतर मंतर पर प्रदर्शन भी किया जाएगा। विरोध करने वालो ने एकमत होकर कहा कि यह भ्रष्टाचार का एक बड़ा मामला है, जिसके दोषियों पर एफ आई आर दर्ज कर गिरफ्तारी होनी चाहिए।

सड़क परिवहन और सुरक्षा विधेयक के बारे में 8 बातें जो आपको जाननी चाहिए

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 2014 में प्रस्तावित सड़क परिवहन और सुरक्षा विधेयक में मौजूदा व्यवस्था में कई बदलावों का सुझाव दिया गया था। अगर यह विधेयक लागू होता है, तो यह 1988 के मोटर वाहन अधिनियम की जगह लेगा, जो अब भारत में सड़क परिवहन व्यवस्था को नियंत्रित करता है। जैसा कि मसौदे में कहा गया है, इस विधेयक का उद्देश्य भारत में सभी सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक रूप से नियोजित और विकसित प्रणाली प्रदान करना, मौजूदा परिवहन व्यवस्था में सुधार करना और बेहतर बुनियादी ढांचे और वाहनों को प्रोत्साहित करना है।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने विधेयक को सार्वजनिक चर्चा के लिए खोल दिया, जिसके बाद अप्रैल 2015 में विधेयक का चौथा संस्करण प्रस्तावित किया गया था।

विधेयक के मुख्य बिन्दु क्या हैं?

1. यह विधेयक मोटर वाहन अधिनियम, 1988 का स्थान लेगा और अपराधों के लिए कठोर दंड का प्रावधान करेगा

2. वाहनों, सड़कों और उपयोगकर्ताओं के लिए राष्ट्रव्यापी न्यूनतम सुरक्षा मानक लागू किया जाएगा

3. मोटर वाहन विनियमन और सड़क सुरक्षा प्राधिकरण नामक एक केंद्रीकृत इकाई भारत में सड़क परिवहन और सड़क सुरक्षा के विनियमन की देखभाल करेगी, जो राज्य परिवहन विभागों का

स्थान लेगी।

4. केंद्रीकृत इकाई वाहन कर एकत्र करने, पंजीकरण और परमिट जारी करने के लिए भी जिम्मेदार होगी

5. एक व्यक्ति को केवल एक ही ड्राइविंग लाइसेंस रखने की अनुमति होगी

6. ड्राइविंग लाइसेंस के लिए टेस्ट स्वचालित होगा

7. दुर्घटनाओं की स्थिति में मदद के लिए एक समान सड़क दुर्घटना जांच प्रणाली और सड़क दुर्घटना आपातकालीन पहुंच टेलीफोन नंबर शुरू किया जाएगा।

8. प्रत्येक लाइसेंस धारक द्वारा यातायात उल्लंघन को रिकॉर्ड करने के लिए एक अंक-आधारित प्रणाली का उपयोग किया जाएगा। रिकॉर्ड पर 12 अंक का मतलब होगा एक वर्ष के लिए लाइसेंस का निलंबन, साथ ही जुर्माना और जेल की सजा

इस विधेयक के ज़रिए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय का लक्ष्य लापरवाह या तेज़ रफ़्तार से गाड़ी चलाने और खराब बुनियादी ढांचे के कारण होने वाली सड़क दुर्घटनाओं की संख्या को कम करना और भ्रष्टाचार पर भी लगाम लगाना है। विधेयक से सड़क दुर्घटनाओं में त्वरित सहायता प्रदान करने की भी उम्मीद है।

सड़क परिवहन मंत्रालय ने मोटर वाहन अधिनियम में महत्वपूर्ण संशोधनों का प्रस्ताव दिया है। आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सड़क परिवहन मंत्रालय ने मोटर वाहन अधिनियम में महत्वपूर्ण संशोधनों का प्रस्ताव दिया है। जिसमें मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण (एमएसीटी) को दावों के समाधान के लिए 12 महीने की समय-सीमा देना और मोटरसाइकिलों को कॉन्ट्रैक्ट कैरिज (अनुबंध गाड़ी) के तहत शामिल करके उनके व्यावसायिक इस्तेमाल की अनुमति देना शामिल है। इसमें रैपिडो और उबर जैसे एग्रीगेटर्स द्वारा उनके उपयोग की अनुमति देना भी शामिल है।

कॉन्ट्रैक्ट कैरिज का मतलब यात्रियों को ले जाने के लिए किराए पर लिए गए वाहन हैं। जबकि मौजूदा कानून कॉन्ट्रैक्ट कैरिज के तहत सभी वाहनों के इस्तेमाल की अनुमति देता है। वहीं, **प्रस्तावित संशोधन का मकसद मोटरसाइकिलों के संबंध में कानूनी स्पष्टता प्रदान करना है।**

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, यह कुछ राज्यों द्वारा राइड-हेलिंग सर्विस के लिए दोपहिया वाहनों के इस्तेमाल को प्रतिबंधित करने के मद्देनजर किया गया है। इसके अलावा, मंत्रालय यात्री सुरक्षा को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए मोटरसाइकिलों को शामिल करने के लिए 'कैब एग्रीगेटर्स गाइडलाइंस' को संशोधित कर रहा है।

संसद के शीतकालीन सत्र में पेश किए जाने वाले 67 प्रस्तावित संशोधनों में 'शैक्षणिक संस्थानों की बसों' की नई परिभाषा और हल्के

मोटर वाहनों (एलएमवी) को उनके सकल भार (ग्रॉस वेट) के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रस्ताव शामिल है। **पहली बार, तिपहिया वाहनों की परिभाषा भी सुझाई गई है। ये बदलाव सुप्रीम कोर्ट के एक मामले के बाद किए गए हैं।**

एक प्रमुख संशोधन में 'शैक्षणिक संस्थान बस' को किसी भी वाहन के रूप में फिर से परिभाषित करने की कोशिश की गई है। जिसमें चालक को छोड़कर छह से ज्यादा व्यक्ति होते हैं, जो छात्रों और कर्मचारियों के परिवहन के लिए संस्थान द्वारा स्वामित्व में, लीज पर या किराए पर लिया जाता है। **मंत्रालय ने ड्राइवरों और नियोक्ताओं की जवाबदेही बढ़ाने के लिए ऐसी बसों द्वारा किए गए ट्रैफिक उल्लंघन के लिए दंड को दोगुना करने का भी प्रस्ताव किया है।**

सरकार सुप्रीम कोर्ट को दिए गए आश्वासन को पूरा करने के लिए शीघ्र संसदीय मंजूरी के लिए दबाव बना रही है। जो इस बात की जांच कर रहा है कि क्या हल्के वाहन लाइसेंस वाला व्यक्ति 7,500 किलोग्राम तक के भार रहित परिवहन वाहन को चला सकता है। जिसे 'माल हल्के मोटर वाहन' के रूप में जाना जाता है।

एक अन्य प्रस्तावित संशोधन राज्यों को कैब एग्रीगेटर्स, ऑटोमेटेड टेस्ट स्टेशनों (एटीएस) और 'मान्यता प्राप्त ड्राइवर प्रशिक्षण केंद्रों' के लिए अनुमोदन प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। जिसके लिए आवेदन जमा करने के छह महीने के भीतर फैसला लेना आवश्यक होगा। अगर राज्य इस समय सीमा के भीतर कार्रवाई करने में नाकाम रहते हैं, तो केंद्र सरकार के दिशा-निर्देशों को प्राथमिकता दी जाएगी।

दिल्ली मेट्रो में केबल चोरी होने से सिग्नल सिस्टम हुआ खराब; इस लाइन पर मेट्रो का परिचालन रहा दिन भर प्रभावित

दिल्ली मेट्रो की रेड लाइन पर एक बार फिर केबल चोरी की घटना के कारण सिग्नल सिस्टम खराब हो गया। इस वजह से रविवार को पूरे दिन मानसरोवर पार्क से सीलमपुर के बीच मेट्रो का परिचालन धीमी गति से हुआ। इससे यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। डीएमआरसी के अनुसार वेलकम से सीलमपुर के बीच किसी ने सिग्नल सिस्टम का केबल चोरी करने की कोशिश की थी।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो के रेड लाइन पर एक बार फिर केबल चोरी के प्रयास के कारण सिग्नल सिस्टम खराब हो गया। इस वजह से रविवार को पूरे दिन रेड लाइन पर मानसरोवर पार्क से सीलमपुर के बीच मेट्रो का परिचालन बहुत धीमी गति से हुआ। इसे वजह से रेल लाइन पर मेट्रो का परिचालन प्रभावित रहा। इससे यात्रियों को सफर में सामान्य दिनों के मुकाबले थोड़ा अधिक समय लगा।

वैसे रविवार साप्ताहिक अवकाश का दिन होने के कारण सामान्य दिनों के मुकाबले मेट्रो में भीड़ कम होती है। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के अनुसार वेलकम से सीलमपुर के बीच किसी ने सिग्नल सिस्टम का केबल चोरी करने का प्रयास किया गया था। इस वजह से सिग्नल सिस्टम में खराबी आ गई। सिग्नल सिस्टम का केबल ठीक करने में समय लगता है।

परिचालन मैनुअल तरीके से धीमी गति से रखा गया

इस वजह से मानसरोवर पार्क से सीलमपुर के बीच मेट्रो का परिचालन मैनुअल तरीके से धीमी गति से जारी रखा गया। ताकि यात्रियों को ज्यादा परेशानी का सामना न करना पड़े। रेड लाइन पर शहीद स्थल से मानसरोवर पार्क और सीलमपुर से रिठाला तक परिचालन सामान्य रूप से हुआ।

रात के बाद ही सिग्नल सिस्टम का केबल होगा ठीक

रात में मेट्रो का परिचालन बंद होने के बाद सिग्नल सिस्टम का केबल ठीक किया जाएगा। इसलिए सोमवार को पूरे कारिडोर पर परिचालन सामान्य रहेगा। उल्लेखनीय है कि 24 अगस्त को भी रेड लाइन पर केबल चोरी की घटना हुई थी। उस दौरान भी पूरे दिन मेट्रो का परिचालन धीमी गति से किया गया था। वेलकम से सीलमपुर के बीच मेट्रो का ट्रैक जमीन पर है। इस वजह से वहां सिग्नल सिस्टम का केवल चोरी होने की आंशका बनी रहती है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02–03–2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम –डीएल – 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :– 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए –4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :– 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

इनसाइड

प्रेग्नेंसी में फायदेमंद हो सकता है इमली का सेवन ! आप ही नहीं बच्चा भी रहेगा सेहतमंद

प्रेग्नेंसी के दौरान खट्टी मीठी इमली महिलाओं को बेहद पसंद आती है, ये इमली केवल स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद हो सकती है. अक्सर गर्भवती महिलाओं को खट्टी चीजें खाने की इच्छा करती है और इमली खट्टी तथा स्वादिष्ट होने के साथ ही ढेरों पोषक तत्वों से भी भरी होती है, ऐसे में प्रेग्नेंसी के दौरान इसका सेवन बच्चे और मां दोनों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है. प्रेग्नेंसी के समय महिलाओं का खाना डॉक्टर की देखरेख में निर्धारित किया जाता है, ऐसे में किसी एलर्जी या साइड इफेक्ट से बचने के लिए एक बार डॉक्टर के सलाह भी अवश्य ले लें. इमली में आयरन, नियासिन और फाइबर की अच्छी खासी मात्रा होती है जो प्रेग्नेंसी में जी मिचलाने से लेकर कब्ज जैसी ढेरों हेल्थ प्रॉब्लम्स से सुरक्षा देती है. आइए जानते हैं, गुणों की खान इमली प्रेग्नेंसी में कौन कौन से हेल्थ बेनिफिट्स दे सकती है :

हड्डियों और दांतों को मिलती है मजबूती

मॉम्स जंक्शन डॉट कॉम के मुताबिक इमली में कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, प्रोटीन और जिंक जैसे माइक्रोन्यूट्रिएंट्स मौजूद होते हैं जो हड्डियों और दांतों को मजबूत रखने के लिए फायदेमंद हो सकते हैं. यह पोषक तत्व इम्यूनिटी बढ़ाने से लेकर ब्लड प्रेशर रेगुलेट करने में तक मदद कर सकते हैं.

कब्ज से मिलेगी राहत

इमली में स्वाद तो होता ही है, साथ ही इसमें मौजूद फाइबर पेट को खुश रखने में भी मदद करता है. प्रेग्नेंसी के दौरान पेट साफ ना होना वजन बढ़ने का कारण बनता है, ऐसे में फाइबर की भरपूर खुराक देने वाली इमली एक स्मार्ट स्नैक ऑप्शन हो सकता है.

बच्चे को पहुंचेगा भरपूर आयरन

बच्चे की अच्छी हेल्थ और सही डिलीवरी में आयरन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसके साथ ही इससे ब्लड वॉल्यूम भी बढ़ता है. प्रेग्नेंसी के दौरान इमली आयरन का एक टेस्टी सोर्स हो सकती है.

जी मचलाने से मिलेगी निजात

प्रेग्नेंसी के दौरान मॉर्निंग सिकनेस और जी मचलाने की समस्या आम है. अचार और दूसरे खट्टे फूड आइटम से बेहतर पोषण से भरी इमली का सेवन पेट को शांत कर उल्टी आने जैसी समस्याओं से बचाव में मदद कर सकता है.

बच्चा बनेगा सेहतमंद

इमली में मौजूद नियासिन बच्चे की सेहत बनाने में एक अहम किरदार बनता है. विटामिन ए, सी और के की पर्याप्त मात्रा पहुंचाने वाली इमली के सेवन से बच्चे की स्किन, डाइजेस्टिव सिस्टम और नर्वस सिस्टम मजबूत बन सकता है.

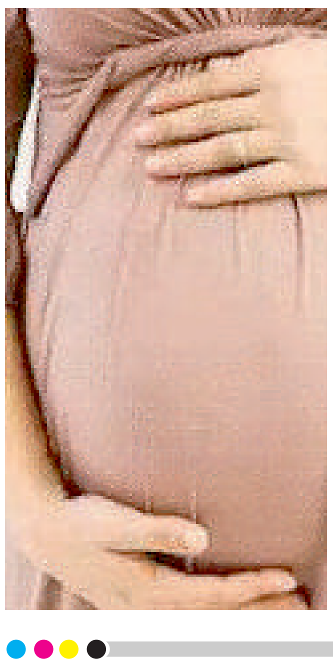

क्या होता है महिलाओं का रि-करेंट मिसकैरेज ? 1 छोटी सी लापरवाही भी हो सकती घातक, डॉक्टर से जानें चौंकाने वाले कारण

कई महिलाओं को रि-करेंट मिसकैरेज या गर्भपात की समस्या का सामना करना पड़ता है. इसके लक्षणों को पहचानना कई बार मुश्किल हो जाता है, क्योंकि ये आमतौर पर प्रेग्नेंसी के शुरुआती दौर में ही होता है. अब सवाल है कि आखिर रि-करेंट मिसकैरेज होता क्या है ? कौन से कारण हो सकते हैं जिम्मेदार ? आइए जानते हैं इन सवालों के बारे में-

गर्भपात यानी मिसकैरेज किसी भी महिला के लिए आसान नहीं होता है. डॉक्टर बताती हैं कि प्रेग्नेंसी के शुरुआती दौर में ही महिला और भ्रूण का कनेक्शन काफी स्ट्रांग हो जाता है. ऐसे में मिसकैरेज का दर्द सहन कर पाना काफी मुश्किल हो सकता है. इसलिए कारणों का पता करके डॉक्टर की सलाह से समय पर इलाज कराना जरूरी है. दरअसल, कई महिलाओं को रि-करेंट मिसकैरेज की समस्या का सामना करना पड़ता है. रि-करेंट मिसकैरेज के लक्षणों को पहचानना कई बार मुश्किल हो जाता है, क्योंकि ये आमतौर पर प्रेग्नेंसी के शुरुआती दौर में ही होता है. अब सवाल है कि आखिर रि-करेंट मिसकैरेज होता क्या है? कौन से कारण हो सकते हैं जिम्मेदार? इन सवालों के बारे में News18 बता रही हैं राजकीय मेडिकल कॉलेज कन्नौज की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. अमृता साहा-

क्या होता है रि-करेंट मिसकैरेज

गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. अमृता साहा बताती हैं कि, जिन महिलाओं का तीन से अधिक बार 20-21 हफ्ते में गर्भपात हो चुका हो तो उसे रि-करेंट मिसकैरेज कहा जा सकता है. रि-करेंट मिसकैरेज किसी बीमारी या पहले हो चुके गर्भपात के कारण हो सकता है. इसके अलावा भ्रूण के विकास में होने वाली समस्याएं भी इसका कारण बन सकती हैं.

ये 4 कारण भी हो सकते हैं रि-करेंट मिसकैरेज के कारण

शारीरिकः हर महिला का गर्भाशय शारीरिक रूप से अलग होता है जिससे उसके सफल गर्भधारण की संभावना कम और ज्यादा हो सकती है. कई बार गर्भाशय का असामान्य आकार और ग्रीवा का कमजोर होना भी गर्भपात का कारण बन सकता है. गर्भपात सरवाइकल, फाइब्रॉयड, गर्भाशय में चोट या जन्मजात समस्याएं भी गर्भपात के जोखिम को बढ़ा सकती हैं.

ब्लड क्लॉटः कई बार गर्भाशय में होने वाले ब्लड क्लॉट भी गर्भपात का कारण बन सकते हैं. इसे मेडिकल टर्म में एंटीफॉस्फोलिपिड सिंड्रोम कहा जाता है. इसके अलावा कमजोर इम्यून सिस्टम को भी इसका जिम्मेदार माना जा सकता है.

हार्मोनलः हार्मोनल समस्याएं भी बार-बार होने वाले गर्भपात का कारण बन सकती हैं. शरीर में प्रोजेस्टेरोन की कमी गर्भपात को बढ़ावा दे सकती है. इसके अलावा एलिवेटिड प्रोलेक्टिन, इंसुलिन रेसिसटेंस और थायराइड डिसऑर्डर भी रि-करेंट मिसकैरेज का कारण हो सकते हैं.

बेहद घातक है महिलाओं की ये बीमारी, शर्मिंदगी हंसती-खेलती जिंदगी में घोल देती है जहर, डॉक्टर से समझें 5 शुरुआती लक्षण

आजकल की खराब जीवनशैली में गर्भाशय कैंसर के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं. यह तब होता है जब एंडोमेट्रियम (गर्भाशय की अंदरूनी परत) की कोशिकाएं असामान्य रूप से विभाजित और बढ़ने लगती हैं. ये कोशिकाएं ट्यूमर का रूप लेती हैं, जो कैंसर का कारण बन जाती है. इसके शुरुआती लक्षणों के बारे में बता रही हैं डॉ. अमृता साहा-

कहने को तो दुनिया तेजी से बदल रही है और महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं. अपनी बात को बेबाकी के साथ रखती भी हैं. लेकिन सच्चाई ये है कि आज भी लाखों महिलाएं अपनी बीमारी को छुपाती हैं. लेकिन, क्या आप जानती हैं कि ऐसा करना घातक हो सकता है? दरअसल, महिलाओं को होने वाली तमाम ऐसी बीमारियां हैं, जिनको इग्नोर करने से उनकी जान भी जा सकती है. गर्भाशय या बच्चेदानी का कैंसर उनमें से एक है. इसको एंडोमेट्रियल कैंसर व यूटेराइन कैंसर के नाम से भी जाना जाता है. जी हां, गर्भाशय या बच्चेदानी महिलाओं की प्रजनन प्रणाली का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है. यही वो स्थान है, जहां गर्भधारण के बाद भ्रूण का विकास होता है. इसलिए बच्चेदानी का स्वस्थ्य होना बेहद जरूरी है.

आजकल की खराब जीवनशैली में गर्भाशय कैंसर के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं. यह तब होता है जब एंडोमेट्रियम (गर्भाशय की अंदरूनी परत) की कोशिकाएं असामान्य रूप से विभाजित और बढ़ने लगती हैं. ये कोशिकाएं ट्यूमर का रूप ले लेती हैं, जो आगे चलकर कैंसर का कारण बन जाती है. ऐसे जरूरी है कि शुरुआती लक्षणों को पहचानें. ताकि, समय रहते इलाज कराकर जिंदगी को बचाया जा सके. अब सवाल है कि आखिर गर्भाशय कैंसर के शुरुआती हैं क्या? इस बारे में News18 को विस्तार से बता रही हैं राजकीय मेडिकल कॉलेज कन्नौज की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. अमृता साहा-

बच्चेदानी में कैंसर होने के 5 शुरुआती संकेत

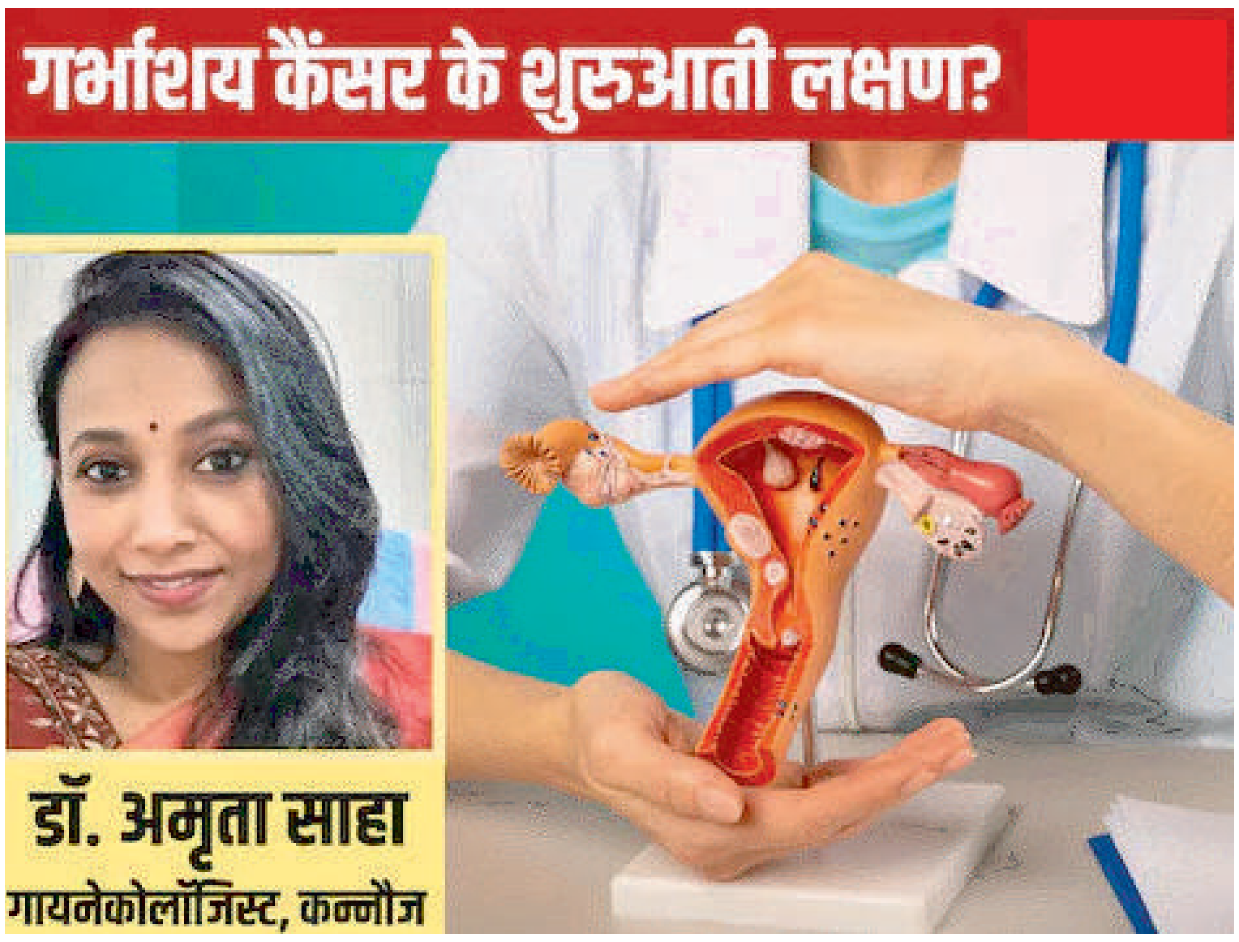

पेट के निचले हिस्से में दर्दः डॉ. अमृता साहा बताती हैं कि, पेट के निचले हिस्से में दर्द और ऐंठन होना बच्चेदानी में कैंसर का संकेत हो सकता है. इसके अलावा, महिलाओं को श्रोणि में ऐंठन का अनुभव भी हो सकता. अगर आपको बार-बार इस तरह की परेशानी महसूस हो रही है, तो आपको तुरंत डॉक्टर के पास जाकर अपना चेकअप करवाना चाहिए.

ब्लीडिंग या स्पॉटिंग होनाः यदि किसी महिला को पीरियड्स के अलावा अन्य दिनों में ब्लीडिंग होती है या महीने में कई बार ब्लीडिंग या स्पॉटिंग होती है, तो इन लक्षणों को भूलकर भी नजरअंदाज न करें. क्योंकि, यह बच्चेदानी में कैंसर का भी लक्षण हो सकता है. इसके प्रति समझदारी दिखाएं और समय रहते डॉक्टर से मिलकर जांच करवाएं.

कई दिन तक पीरियड रहनाः अगर आपके पीरियड्स सामान्य से अधिक दिनों तक चलते हैं, तो यह बच्चेदानी में कैंसर होने का संकेत हो सकता है. इसके अलावा, आपको पीरियड्स के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव की परेशानी भी हो सकती है. ऐसी स्थिति में आपको तुरंत स्त्री रोग विशेषज्ञ से संपर्क करना चाहिए.

मेनोपॉज के बाद ब्लीडिंग या डिस्चार्जः मेनोपॉज के बाद महिलाओं में व्हाइट डिस्चार्ज या वेजाइनल ब्लीडिंग की समस्या होना भी बच्चेदानी के कैंसर का लक्षण हो सकता है. अगर आपको मेनोपॉज के बाद इस तरह के लक्षण महसूस हो रहे हैं, तो तुरंत डॉक्टर के पास जाकर अपना चेकअप करवाएं ताकि आपका समय पर इलाज किया जा सके.

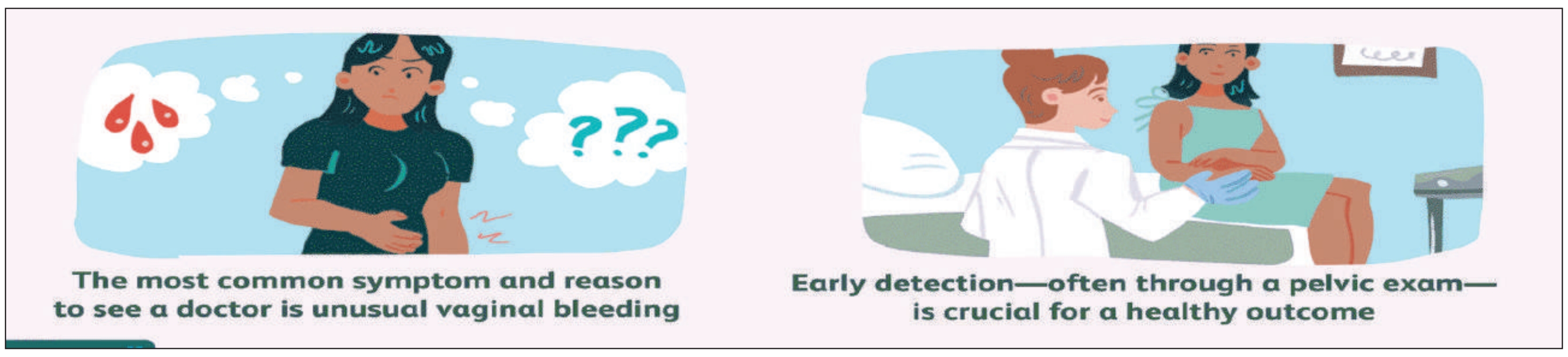

इन 3 आदतों को छोड़ दें महिलाएं, तो हर महीने कर सकती है हजारों रुपये की बचत !

यह पाया गया है कि जब लोग अच्छा कमाते हैं तो सेविंग बढ़ाने की बजाय लोग अपने जीवन का लग्जरी बनाने में अधिक खर्च करने लगते हैं. जिस वजह से बाद में उन्हें दिक्कत आती है और पैसों की जरूरत पड़ने पर उन्हें दूसरों से उधार तक लेना पड़ जाता है. ऐसे में यह जरूरी है कि आप पहले से ही अपने फाइनेंशियल हालात को ध्यान में रखते हुए हर महीने सेविंग जरूर करें. अगर आप हाउस वाइफ हैं या आप अपनी सैलरी का अधिकतर हिस्सा शॉपिंग में खर्च कर देती हैं तो बता दें कि यह आदत आपके लिए आगे चलकर मुश्किल पैदा कर सकती है. यहां हम आपको बताते हैं कि आप हर महीने सेविंग सेविंग किस तरह कर सकती हैं और किन आदतों में बदलाव लाकर किसी अच्छी जगह उन पैसों को इन्वेस्ट कर सकती हैं.

बिना लिस्ट के शॉपिंग करना

अक्सर देखा गया है कि महिलाएं सैलरी मिलने के पहले ही दो हफ्ते में इतना अधिक शॉपिंग कर लेती हैं कि महीने का अंत आते आते उनका अकाउंड खाली होने लगता है. ऐसे में जरूरी है कि आप अपना शॉपिंग लिस्ट बनाएं और उसमें देखें कि सबसे अधिक जरूरी चीज क्या है. इसके बाद देखें कि किन फालतू की चीजों में आपके पैसे खर्च होते हैं. ऐसा करने से आप फलतू खर्च से बची रहेंगी.

मार्केट की बजाय मॉल में खरीददारी

अगर आपको मॉल जाना पसंद है तो इसका मतलब ये नहीं है कि आप हर खरीददारी मॉल से ही करें. बेहतर होगा कि आप अपने आसपास के मार्केट को एक्सप्लोर करें और महीने का सामान, छोटी मोटी चीजें लोकल मार्केट से ही खरीदें. ये सस्ते भी होते हैं और आप इनका जमकर इस्तेमाल भी कर पाएंगी.

महिलाओं के लिए कभी-कभी 'ना' कहना भी जरूरी, जानें किस तरह करें मना

हर महिला चाहती है कि लोग उसे पसंद करें और उसके काम की सराहना हो. कई बार खुद का इमेज बनाए रखने के लिए महिलाएं न चाहते हुए भी उस काम में व्यस्त हो जाती हैं जिस काम को वे नहीं करना चाहती हैं. यही नहीं, महिलाओं की इन आदतों का फायदा भी कई लोग उठा लेते हैं. अगर आपके पास वक्त नहीं है या आप पहले से ही काफी काम लेकर बैठी हैं तो नया काम लेने से पहले आप काम के लिए मना कर सकती हैं, लेकिन इसका भी एक सही तरीका है.

जानी मानी साइकोलॉजिस्ट थेरेपिस्ट ल्यूसिले शैकलेटन के अनुसार किसी काम को मना कर देना आपके इमेज को बिगाड़ने का काम नहीं करता है. बल्कि आप अपने पहले के काम को बेहतर तरीके से मन लगाकर पूरा कर पाती हैं. यहां हम आपको बताते हैं कि आप रिस्पेक्टफुल तरीके से 'ना' किस तरह कह सकती हैं.

महिलाएं इस तरह से कह सकती हैं 'ना'

-'मौका देने के लिए थैंक्स, लेकिन पहले से ही मेरे पास काफी काम दिया जा चुका है. इसे पूरा करने का कमिटमेंट भी मैने दे दिया है'.

-'इस काम को मैं कब तक पूरा कर पाउंगी मुझे भी नहीं पता चल रहा, लेकिन जैसे ही मेरा काम हो जाएगा मैं आपको जानकारी दूंगी'.

-'इनवाइट करने के लिए थैक्स, लेकिन मैं तो आपका काम पूरा ही नहीं कर पाउंगी'.

-'मुझसे आपने पूछा इसके लिए थैंक्स लेकिन..'

-'काश मैं आपका काम पूरा कर पाती'.

-'अगली बार पक्का मैं आपका ही काम पहले पूरा करूंगी'.

-'मेरे बार में सोचने के लिए थैंक्स लेकिन ये काम मुझे दूसरे का पास करना होगा'.

-'इस बार तो नहीं, लेकिन अगली बार जरूर आपका काम कर दूंगी'.

विजेंद्र गुप्ता का आरोप- आप नेताओं ने की हाथापाई; सौरभ भारद्वाज ने कहा- बीजेपी नेता ने बस मार्शल को मारी लात

परिवहन विशेष न्यूज

सौरभ भारद्वाज और अन्य AAP नेताओं को विजेंद्र गुप्ता के पैरों में लेटते हुए देखा गया। भारद्वाज उनसे अनुरोध कर रहे थे कि वे बस मार्शलों को लेकर पास कैबिनेट नोट पर उनकी मंजूरी लेने के लिए एलजी वीके सक्सेना के आवास उनके साथ चलें। वहीं उन्होंने विजेंद्र गुप्ता पर एलजी हाउस के बाहर महिला बस मार्शल को लात मारने का आरोप

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने बस मार्शलों की बहाली के मुद्दे पर सचिवालय और LG आवास पर हंगामा करने के मामले में रविवार को आप मंत्री सौरभ भारद्वाज और पार्टी के तीन विधायकों के खिलाफ मामला दर्ज किया।

दिल्ली विधानसभा में विपक्ष के नेता विजेंद्र गुप्ता की शिकायत के आधार पर दर्ज की गई एफआईआर के अनुसार, AAP विधायकों पर सिविल लाइन्स पुलिस स्टेशन में धारा 351 (2) (आपराधिक धमकी), 126 (2) (गलत तरीके से रोकना) और भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के अन्य प्रासंगिक प्रावधान के तहत केस दर्ज किया गया। दिल्ली पुलिस ने अभी तक इस मामले पर कोई बयान जारी नहीं किया है।

विजेंद्र गुप्ता के पैरों में लेट गए सौरभ भारद्वाज

बता दें, सौरभ भारद्वाज और अन्य AAP नेताओं को विजेंद्र गुप्ता के पैरों में लेटते हुए देखा गया। भारद्वाज उनसे अनुरोध कर रहे थे कि वे बस मार्शलों को लेकर पास कैबिनेट नोट पर उनकी मंजूरी लेने के लिए एलजी वीके सक्सेना के आवास उनके साथ चलें। विजेंद्र गुप्ता का आरोप है कि आप विधायक सौरभ भारद्वाज, कुलदीप कुमार, जरनैल सिंह और रोहित महरोलिया ने अभद्र व्यवहार किया, जिससे हाथापाई की नौबत आ गई।

आप विधायकों पर हाथापाई करने का आरोप

उन्होंने कहा कि ऐसा भाजपा विधायकों द्वारा मार्शलों के मुद्दे पर दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी को ज्ञापन सौंपने के बाद हुआ। गुप्ता ने कहा, ₹जब वे बैठक से बाहर निकल रहे थे तो सचिवालय परिसर में मौजूद आप विधायकों ने दुर्व्यवहार किया और हाथापाई की। बस मार्शलों की बहाली के मुद्दे पर शनिवार को आप और बीजेपी विधायकों ने एक-दूसरे पर आरोप लगाए।

महिला बस मार्शल को लात मारने का लगाया आरोप

वहीं, दिल्ली के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने भी भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने विजेंद्र गुप्ता पर एलजी हाउस के बाहर महिला बस मार्शल को लात मारने का आरोप है। उन्होंने कहा कि पीड़ित की सुरक्षा को लेकर डर है। कल से उनसे संपर्क नहीं हो पाया। उन्होंने कहा कि विजेंद्र गुप्ता बेनकाब हो गए हैं और अपनी हताशा के कारण अब वह AAP विधायकों और निर्दोष बस मार्शलों को झूठे मामलों में फंसाने की कोशिश कर रहे हैं।

दिल्ली एम्स में ऑटोमेटिक रोबोटिक सिस्टम से वार्डों में पहुंचेगी दवा, ऐसी सुविधा वाला देश का पहला अस्पताल

एम्स में अब दवाओं की डिलीवरी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। स्वचालित रोबोटिक इंवेंटरी सिस्टम के जरिए मरीजों को वार्ड में दवाएं पहुंचाई जाएंगी। यह सिस्टम प्रतिदिन 250 ऑर्डर पूरे करने में सक्षम होगा और दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करेगा। एम्स देश का पहला सरकारी अस्पताल होगा जहां इस तरह की सुविधा होगी।

नई दिल्ली। चिकित्सा क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक तकनीक का इस्तेमाल बढ़ रहा है। इसी क्रम में अब एम्स स्टोर में दवाओं के भंडारण, वितरण और प्रबंधन के लिए स्वचालित रोबोटिक इंवेंटरी सिस्टम लगाएगा।

इसके लिए एम्स ने प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। इसलिए उम्मीद है कि अगले वर्ष एम्स का दवा स्टोर स्वचालित रोबोटिक इंवेंटरी सिस्टम से लैस होगा। तब इस रोबोटिक सिस्टम के जरिये वार्ड में मरीजों को दवा पहुंचाई जाएगी। एम्स प्रशासन का दावा है कि एम्स देश का पहला सरकारी अस्पताल होगा जहां इस तरह की सुविधा होगी।

ओपीडी में पहुंचते हैं रोज 15 हजार मरीज

करीब साढ़े तीन हजार बेड की क्षमता वाले एम्स की ओपीडी में प्रतिदिन करीब 15,000 मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं और करीब एक हजार नए मरीज भर्ती होते हैं। अस्पताल में 2800-3000 मरीज हमेशा भर्ती रहते हैं। भर्ती मरीजों के इलाज के लिए एम्स के दवा स्टोर में करीब 1800 तरह की दवाएं खरीदी जाती है। विभिन्न वार्डों से दवा स्टोर में प्रतिदिन दवा के लिए 250 मांग पत्र पहुंचता है।

कागजी कार्रवाई व निगरानी की जरूरत

स्टोर में बड़े स्तर पर दवाओं की खरीद व वितरण होने से बहुत कागजी कार्रवाई व निगरानी की जरूरत होती है। मौजूदा समय में यह काम कर्मचारी मैनुअली करते हैं। जिसमें भ्रष्टाचार की भी आशंका रहती है। इन तमाम कारणों से एम्स ने रोबोटिक तकनीक का सहारा लेने की तैयारी की है। इसके मद्देनजर एम्स ने स्वचालित रोबोटिक इंवेंटरी सिस्टम लगाने के लिए निजी कंपनियों से आवेदन मांगे हैं।

स्वचालित रोबोटिक इंवेंटरी सिस्टम लगेगा

न्यू प्राइवेट वार्ड-तीन के बेसमेंट में दवा स्टोर विकसित कर स्वचालित रोबोटिक इंवेंटरी सिस्टम लगाया जाएगा। यह सिस्टम साफ्टवेयर से जुड़ा होगा और रोबोटिक लिफ्ट होंगी, जो स्टोर में दवा को रखने और वार्डों से दवा की मांग होने पर उसे आपूर्ति करने में मदद करेंगी।

प्रतिदिन 250 आर्डर को पूरा करने में सक्षम

यह सिस्टम प्रतिदिन 250 आर्डर को पूरा करने में सक्षम होगा। दवा स्टोर व वार्ड में नर्सिंग स्टेशन पर एक डैशबोर्ड भी होगा। जहां दवा के स्टाक, दवा की मांग, दवा जारी होने व दवा की लंबित मांग की जानकारी रियल टाइम में प्रदर्शित होगी। इससे निगरानी व्यवस्था बेहतर होगी और दवा की उपलब्धता भी सुनिश्चित होगी।

रोबोटिक सिस्टम के तहत कंवेयर बेल्ट लगेगा

एम्स के मीडिया डिविजन की प्रभारी डॉक्टर रीमा दादा ने कहा कि एम्स में विभिन्न सेंटरों के लिए अलग-अलग स्टोर है। इसे एक जगह सेंट्रलाइज किया जाएगा। रोबोटिक सिस्टम के तहत कंवेयर बेल्ट लगाया जाएगा। इसके जरिये दवा पहुंचाने की व्यवस्था होगी। वैसे एम्स बड़े क्षेत्र में फैला है और कई सेंटर हैं। इस वजह से हर सेंटर में यह सुविधा कर पाना संभव नहीं है।

कंवेयर बेल्ट के जरिये दवा पहुंचाई जाएगी

फिर भी कार्डियक न्यूरो सेंटर (सीएनसी) व कई ब्लॉक के वार्ड में रोबोटिक सिस्टम व कंवेयर बेल्ट के जरिये दवा पहुंचाई जाएगी। दवा सही जगह प्राप्त हो इसके लिए सिस्टम द्वारा स्वतः एक ओटीपी जारी होगा। वार्ड में यह ओटीपी दर्ज करने के बाद दवा डिलीवर होगी। इससे आगे चलकर दवा स्टोर में कर्मचारियों की संख्या कम होगी।

विवेकानंद कॉलेज की दूसरी मंजिल से छात्रा ने लगाई छलांग, गंभीर

पूर्वी दिल्ली के विवेक विहार स्थित डीयू के विवेकानंद महिला कॉलेज की दूसरी मंजिल से रविवार सुबह एक छात्रा ने छलांग लगा दी। घायल हालत में 19 वर्षीय छात्रा को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है। छात्रा अपने परिवार के साथ पीतमपुरा इलाके में रहती है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पूर्वी दिल्ली। विवेक विहार स्थित डीयू के विवेकानंद महिला कालेज की दूसरी मंजिल से रविवार सुबह एक छात्रा ने छलांग लगा दी। घायल हालत में 19 वर्षीय छात्रा को डॉ. हेडगेवार अस्पताल में भर्ती करवाया, हालत गंभीर होने पर उसे जीटीबी अस्पताल रेफर कर दिया।

विवेक विहार थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि छात्रा बयान देने की स्थिति में नहीं है। उसके स्वजन से पूछताछ कर मामले की जांच की जा रही है।

परिवार के साथ पीतमपुरा में रहती है छात्रा

पुलिस ने बताया कि छात्रा परिवार के साथ पीतमपुरा इलाके में रहती है। वह डीयू के स्कूल आफ ओपन लर्निंग से स्नातक कर रही है। विवेकानंद कालेज में हर रविवार को उसकी कक्षा लगती है। वह छह अक्टूबर को कालेज गई थी। अचानक से दूसरी मंजिल से नीचे कूद गई।

सुबह 10:50 बजे मामले की सूचना पुलिस को दी गई। छात्रा के हाथ और पैर में काफी चोटें आई हैं। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर छात्रा के स्वजन को वारदात की सूचना दी।

सार्वजनिक जगह पर पेशाब करने से रोका तो बौखलाया शख्स; सो रहे व्यक्ति को बेरहमी से पीटा

नई दिल्ली। दिल्ली में एक शख्स को पीटने का वीडियो इन दिनों जमकर वायरल हो रहा है। इसमें एक शख्स को एक सो रहे व्यक्ति पर लाठी से बेरहमी से पीटते हुए देखा जा रहा है। घटना सामने आने के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। जानकारी के मुताबिक पीड़ित ने कथित तौर पर आरोपी को सार्वजनिक स्थान पर पेशाब न करने के लिए कहा था। यह घटना शुक्रवार को उत्तरी दिल्ली के मॉडल टाउन में हुई और घटना सीसीटीवी में कैद हो गई।

वीडियो में आरोपी को दोपहिया वाहन से उतरते और फुटपाथ पर सो रहे एक व्यक्ति के पास आते हुए दिखाया गया है। फिर वह उसे जगाता है और उसे डंडे से पीटना शुरू कर देता है। वहीं उसके दो दोस्त बाइक पर इंतजार कर रहे थे। लगभग 20 सेकंड तक उस पर हमला करने के बाद वह लौटने लगता है लेकिन फिर अचानक शख्स के पास आकर उसे दोबारा पीटने लगता है।

दिल्ली के मॉडल टाउन इलाके में सो रहे शख्स की डंडे से की बेरहमी से पिटाई। उसका गुनाह सिर्फ यह था कि उसने आरोपी को एक पार्क में पेशाब करने से रोका था। आखिर क्या हो गया है लोगों को?

इसके बाद वह अपने दोस्तों के साथ बाइक से भाग जाता है। पुलिस ने सीसीटीवी का विश्लेषण करने के बाद जांच शुरू की और पता चला कि आरोपी आर्यन उसी इलाके में एक घर में नौकर के रूप में काम करता था।

सीता की विदाई व राम बनवास की लीला देख आंखें हुई नम

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 में दशरथ कैकई संवाद व राम बनवास कि लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। कंप्यूटरराइड यंत्रों, लेजर लाइट व एलईडी स्क्रीन के सहयोग से सुंदरबन, भव्य एवं खूबसूरत महल दिखाया गया। राम बनवास की लीला देख दर्शकों की आंखें नम हो गई। रामलीला का उद्घाटन डॉक्टर एन.पी. शुक्ला वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के पूर्णकालिक तकनीकी सदस्य व सतीश गर्ग कोषाध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश के द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ एन पी शुक्ला ने कहा कि राम का जीवन त्याग की प्रतिमूर्ति है उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए राजमहल को छोड़ दिया। प्रभु राम ने नियम त्याग का एक आदर्श स्थापित किया किया। अध्यक्ष अशोक गर्ग व महामंत्री अनिल यादव ने दर्शकों से पर्यावरण संरक्षण में सहयोग हेतु अपील की। कार्यक्रम में देवराज, बी पी गर्ग, चंदन शर्मा, नितिन बत्रा, प्रदीप गोयल, प्रवीण कुमार सिंह, देवेंद्र गुप्ता, संदीप खंडेलवाल, आनंद गुप्ता, श्रवण सिंघल, विनोद अग्रवाल, श्याम सुंदर, उपस्थित रहे।

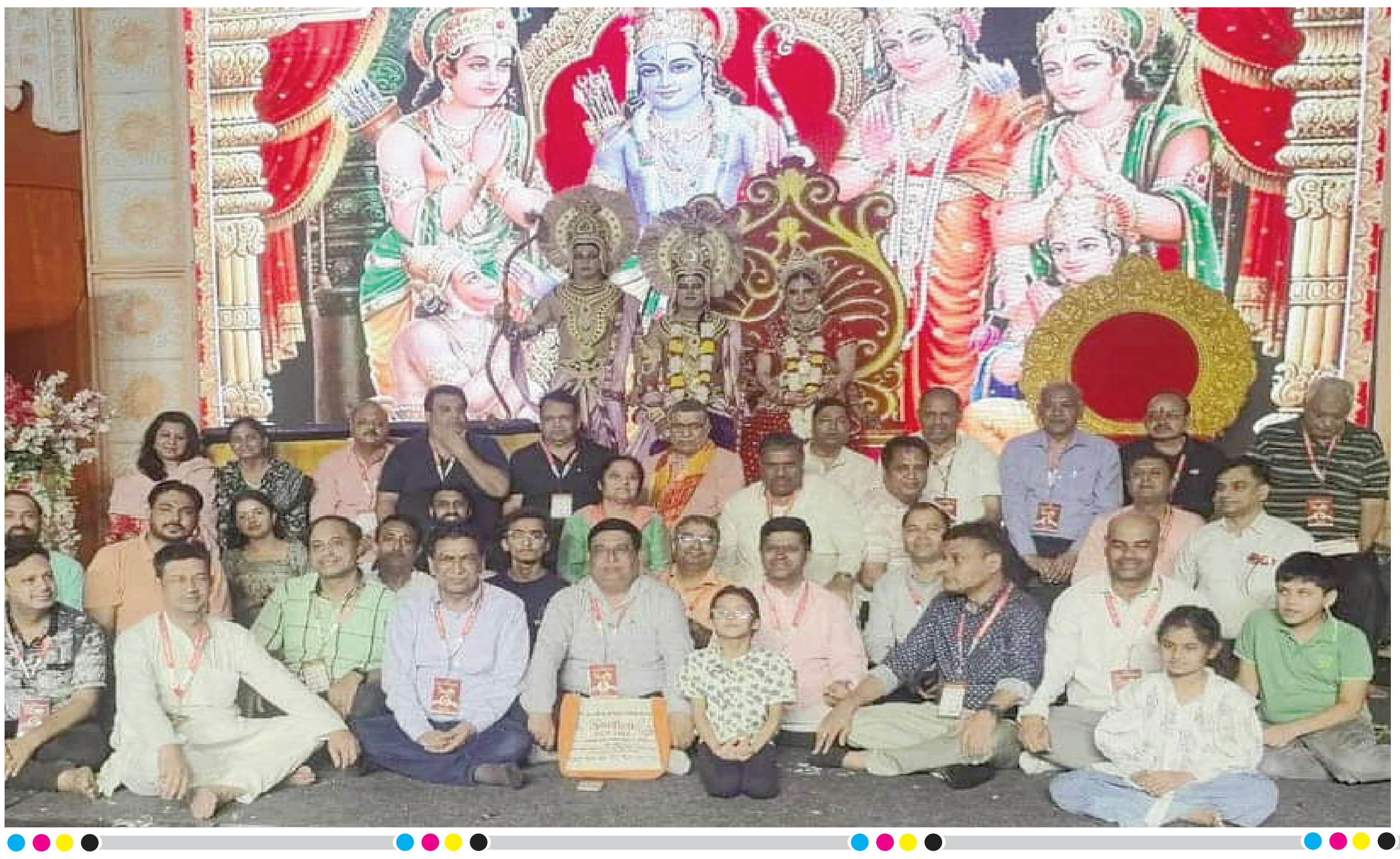

पानी की जगह शहद में मिलाकर खाएं डॉयफ्रूइट्स, मिलेगा दोगुना फायदा' डॉ हृदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने शिव मंदिर तिरख़ा कॉलोनी बल्लबगढ़ फरीदाबाद में स्वास्थ हित के लिए जन सभा का आयोजन किया

ड्राई फ्रूट्स को आप पानी में भिगोकर ही खाते हैं, अगर, मैं आपसे यह कहूं कि आप इसे पानी की जगह शहद में भिगोकर खाएं तो इसके फायदे कई गुना बढ़ जाते हैं. तो आप यकीन करेंगे. अगर, आपको इन बातों पर यकीन नहीं आ रहा है तो आजमाकर देखिए. 1-2 हफ्ते में ही आपको इसके परिणाम दिखाई देने लगेंगे. यह आयुर्वेद में भी वर्णित है कि अगर सूखे मेवा को शहद में भिगोकर खाते हैं तो इससे शरीर को ताकत मिलती है. ड्राई फ्रूट्स का स्वाद कई गुना बढ़ जाता है

आप वजन कम करने की सोच रहे हैं तो आपके लिए यह उपाए कारगर साबित होगा,

जी नहीं. आप काजू, बादाम, अखरोट, छुहारा, अंजीर, प्लेन पिस्ता जैसे ड्राई फ्रूट्स को शहद में भिगोकर खा सकते हैं. आप चाहें को इसमें सीड्स भी मिला सकते हैं.

बड़ा आसान है, जिस तरह से आप पानी में ड्राय फ्रूट्स को भिगोकर खाते हैं ठीक वैसे ही अपनी पसंद के ड्राय फ्रूट्स को शहद में भिगोकर खा सकते हैं. हां, ड्राय फ्रूट्स को आप दो हिस्सों में या पतला-पतला भी काट सकते हैं. अगर, आप इसका स्वाद और बेहतर करना चाहते हैं तो इसमें खड़े मसाले जैसे- 3-4 हरी इलाइची, 4-5 काली मिर्च, 2 लौंग और 1 टुकड़ा दालचीनी हल्का कूटकर डाल सकते हैं. सारे ड्राय फ्रूट्स शहद में अच्छी तरह से मिल जाएं, इसके लिए आप इसे अच्छे से चला लें. ताकि इनके अंदर तक शहद अच्छी तरह से भर जाए.

सौंठ भी मिला सकते हैं

अगर, आप चाहें तो इस मिश्रण में 1 चम्मच सौंठ का पाउडर भी मिल सकते हैं. सौंठ स्वाद बढ़ाती है. यह गर्म तासीर की होती है तो यह रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करती है. आप नियमित अपनी स्वेच्छा से 1-2 बार इस मिश्रण को खा सकते हैं.

एपल के 1600 मोबाइल लूट के नोएडा से जुड़े तार, मध्यप्रदेश पुलिस ने दी दबिश

परिवहन विशेष न्यूज

मध्य प्रदेश के सागर जिले में हुई 1600 Apple मोबाइल चोरी के मामले में नोएडा पुलिस ने छापेमारी की। सेक्टर 63 थाना क्षेत्र में एक मोबाइल की लोकेशन मिली। मध्य प्रदेश पुलिस को शक है कि लूट के मोबाइल को एनसीआर में खपाया गया है। गिरोह ने चेन्नई से चले ट्रक को रेकी कर निशाना बनाया था। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नोएडा। मध्यप्रदेश के सागर जिले के बादरी थाना क्षेत्र में लखनादौन-झांसी हाइवे पर 15 अगस्त को हुई एपल कंपनी के 1600 मोबाइल चोरी मामले में शनिवार को पुलिस ने नोएडा में दबिश दी।

मेवाती गिरोह ने चोरी किये मोबाइलों में से एक की लोकेशन सेक्टर 63 थाना क्षेत्र में मिली। मध्यप्रदेश पुलिस ने शनिवार को स्थानीय पुलिस को साथ लेकर जांच की। मध्यप्रदेश पुलिस मोबाइल रिकवरी में जुटी है। टीम को उम्मीद है कि नोएडा समेत एनसीआर में भी लूट के मोबाइल को खपाया गया है।

150 से ज्यादा मोबाइल खोज चुकी है पुलिस

मध्यप्रदेश सागर की क्राइम ब्रांच पुलिस अधिकारियों के मुताबिक पुलिस 150 से ज्यादा मोबाइल खोज चुकी है, लेकिन अभी भी 1450 मोबाइल गुम हैं। जांच के दौरान एक मोबाइल की लोकेशन नोएडा के वाजिदपुर गांव में मिली। इसी के सिलिसिले में शनिवार को टीम सेक्टर 63 थाने पहुंचीं। स्थानीय पुलिस को केस के बारे में अवगत कराया।

थाने से टीम एच ब्लॉक चौकी पुलिस संग लेकर लोकेशन पर गई और जांच पड़ताल की। मध्यप्रदेश पुलिस ने स्थानीय लोगों से पूछताछ की और साक्ष्य एकत्रित किये। थाना पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मध्यप्रदेश पुलिस टीम ने संपर्क किया है। क्राइम ब्रांच टीम का पूरा सहयोग किया जाएगा।

12 करोड़ कीमत के हैं लूटे मोबाइल

मध्यप्रदेश पुलिस के मुताबिक 14 अगस्त को चेन्नई से एपल कंपनी के चार हजार मोबाइल की खेप लेकर चालक चला था। सभी मोबाइल की दिल्ली डिलीवरी होनी थी। गिरोह ने चेन्नई से चले ट्रक को रेकी कर निशाना बनाया था। पुणे से गिरोह के सदस्य ट्रक चालक के संपर्क में आये थे।

चाय के बहाने गार्ड की मदद से चालक तक पहुंचे और अपनी लाचारी दिखाकर ट्रक में बैठ गए थे। आरोपितों ने सागर जिले में वारदात को अंजाम दिया था। ट्रक ड्राइवर के हाथ-पैर बांधकर बदमाश ट्रक में लदे एपल कंपनी के 12 करोड़ रुपए के 1600 मोबाइल पर हाथ साफ कर ले गए थे। वहीं सागर पुलिस के टरकाने पर 15 दिन तक मुकदमा दर्ज नहीं हुआ। लूट का मामला आईजी प्रमोद वर्मा के संज्ञान में आने पर थाना प्रभारी समेत कई पुलिसकर्मियों नपे थे।

एनसीआर में खपने के मिले इनपुट

नोएडा में लूट के मोबाइल की लोकेशन मिलने से मध्यप्रदेश पुलिस को आशंका है कि एनसीआर में लूट के मोबाइल को खपाया गया है। करोलबाग समेत कई जगह पर मोबाइल बिना बिल के भी सस्ते दामों पर मिलते हैं। इस कारण लोग एपल कंपनी के महंगे मोबाइल खरीद लेते हैं। हालांकि मध्यप्रदेश पुलिस केस की जांच कर रही है। लूट के बाद मोबाइलों को ठिकाने लगाने वाला का भी पता करने में जुटी है।

अखिलेश यादव को उपचुनाव से पहले लगा बड़ा झटका, पश्चिमी यूपी के कद्दावर नेता ने छोड़ी समाजवादी पार्टी

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश विधानसभा उपचुनाव से पहले समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री Akhilesh Yadav को पश्चिमी यूपी में बड़ा झटका लगा है। समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव परमानंद गर्ग अखिलेश यादव का साथ छोड़ दिया है। वह सपा छोड़कर बसपा में शामिल हो गए हैं। परमानंद गर्ग के पार्टी छोड़ने से गाजियाबाद विधानसभा उपचुनाव में समाजवादी पार्टी की जीत की राह कठिन होगी।

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश विधानसभा उपचुनाव से ठीक पहले समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव (Akhilesh Yadav) को बड़ा झटका लगा है। परमानन्द गर्ग शनिवार को सपा छोड़कर बसपा में शामिल हो गए हैं। अग्रसेन भवन में आयोजित कैडर कैंप में परमानन्द गर्ग का स्वागत करने के साथ ही शहर विधानसभा सीट का प्रभारी बनाया गया है।

उलटफेर के बाद रोचक होगा गाजियाबाद उपचुनाव

परमानन्द गर्ग के पार्टी में शामिल होने की बसपा जिला अध्यक्ष दयाराम सैन ने पुष्टि की है। सपा के किले में सेंधमारी करते हुए एक महारथी को बसपा ने अपने खेमे में शामिल कर लिया है। सपा के प्रदेश सचिव से इस्तीफा देने वाले परमानन्द गर्ग बसपा में शामिल हो गए हैं।

गाजियाबाद विधानसभा सीट का बनाया गया प्रभारी

उन्होंने समाजवादी पार्टी पर वैश्य समाज की अनदेखी करने का आरोप लगाया है। बसपा में शामिल होने के बाद उन्हें विधानसभा प्रभारी की जिम्मेदारी दी गई है। इस उलटफेर के बाद गाजियाबाद उपचुनाव रोचक स्थिति में आ गया है।

निर्णायक की भूमिका निभाएगा वैश्य समाज

इस सीट पर वैश्य समाज निर्णायक की भूमिका निभाएगा। एक दिवसीय बसपा कैडर कैंप में बसपा के मेरठ मण्डल के कॉर्डिनेटर शमसुद्दीन राइन, सूरजमल जाटव व जिलाध्यक्ष दयाराम सेन की मौजूदगी में परमानन्द गर्ग ने अपने समर्थकों सहित बसपा की सदस्यता ग्रहण की।

मधुबन बापूधाम योजना के किसानों-आवंटियों को बड़ी राहत, अब नहीं आना होगा GDA के मुख्य कार्यालय

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) मधुबन बापूधाम योजना के आवंटियों और किसानों के लिए साइट ऑफिस खोल रहा है। अब उन्हें अपनी समस्याओं के लिए जीडीए मुख्य कार्यालय नहीं आना होगा। प्रत्येक मंगलवार को अपर सचिव अनुभाग के अधिकारी साइट ऑफिस में मौजूद रहकर समस्याओं का समाधान करेंगे। किसानों को दिए जाने वाले 647 प्लॉट जल्द दिए जाने के निर्देश दिए गए हैं।

गाजियाबाद। मधुबन बापूधाम योजना के आवंटियों और किसानों को अपनी समस्या लेकर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) के मुख्य कार्यालय नहीं आना होगा। जीडीए मंगलवार से मधुबन बापूधाम में ही साइट ऑफिस आरंभ कर रहा है, जिसमें प्रत्येक मंगलवार को अपर सचिव अनुभाग के अधिकारियों के साथ दफ्तर में मौजूद रहकर आवंटियों और किसानों के साथ ही यहां के लोगों की समस्याओं को सुनेंगे।

इसके अलावा रोस्टरवार एई और जेई साइट ऑफिस में मौजूद रहेंगे। शनिवार को जीडीए सभागार में वीसी अतुल वत्स ने मधुबन बापूधाम योजना के विकास और समस्याओं को दूर करने के लिए समीक्षा बैठक की। उन्होंने मधुबन बापूधाम में आवंटियों और किसानों की शिकायतों को सुनकर उनके समाधान के निर्देश दिए। बैठक में किसानों को दिए जाने वाले 647 प्लॉट अतिशीघ्र लॉटरी के माध्यम से दिए जाने के निर्देश दिए।

आवंटियों को दूसरी जगह मिलेंगे प्लॉट

ऐसे किसान जिनको मुआवजा नहीं मिला है उसके लिए एडीएम भू एवं राजस्व कार्यालय से समन्वय कर मुआवजा दिलाया जाए। शमशान घाट से प्रभावित प्लॉट परिवर्तित कराने के लिए प्रार्थना पत्र लेकर आवंटियों को दूसरी जगह प्लॉट देने की प्रक्रिया अमल में लाने को कहा। उन्होंने बताया कि मधुबन बापूधाम में सीवर, बिजली और पानी को लेकर विकास कार्य कराए जाएं।

प्राधिकरण की भूमि पर किए गए अवैध कब्जों को हटवाया जाए। आवंटियों और किसानों की समस्याओं को सुना जाए। इसके लिए मंगलवार को अपर सचिव प्रदीप कुमार सिंह संबंधित अनुभाग अधिकारियों के साथ मौजूद रहकर समस्याओं को सुनकर उनका समाधान कराएंगे।

जल्द खुलने वाली है 361 लोगों की किस्मत, घर बैठे देख सकेंगे प्लॉट योजना की लॉटरी

परिवहन विशेष न्यूज

यमुना अर्थारिटी की आवासीय प्लॉट योजना में दो लाख से अधिक लोगों ने आवेदन किया था। अर्थॉरिटी ने 5 जुलाई को 361 आवासीय प्लॉट की योजना निकाली थी। लॉटरी प्रक्रिया में शामिल होने वाले आवेदकों की सूची तीन अक्टूबर को Yamuna Authority ने पोर्टल पर जारी कर दी है। अब 10 अक्टूबर को लॉटरी निकलने के साथ 361 लोगों की किस्मत खुलेगी।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण (Yamuna Authority) की आवासीय प्लॉट योजना में केवल एक प्रतिशत आवेदक ही लॉटरी स्थल पर मौजूद रहेंगे। शेष आवेदकों को सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से लॉटरी प्रक्रिया का सजीव प्रसारण देखने को मिलेगा। आवेदकों की अधिक संख्या को देखते हुए प्राधिकरण ने केवल एक प्रतिशत आवेदकों को ही लॉटरी स्थल पर उपस्थित रहने की अनुमति दी है।

नाम की पर्ची निकालकर होगा आवंटन

इनकी सूची पोर्टल पर अपलोड कर दी गई है। यमुना प्राधिकरण की आवासीय प्लॉट योजना में आवंटन के लिए 10 अक्टूबर को लॉटरी प्रक्रिया संपन्न होगी। आवेदकों के नाम की पर्ची निकालकर प्लॉटों का आवंटन होगा।

योजना में प्राधिकरण को 361 प्लॉटों के सापेक्ष 202822 आवेदन मिले थे। इसमें एक मुश्त भुगतान के लिए अलावा पचास प्रतिशत राशि एक मुश्त व शेष किस्त में व तीस प्रतिशत राशि एक मुश्त व सत्तर प्रतिशत किस्त में देने का विकल्प चुनने वाले आवेदक भी शामिल हैं।

लॉटरी में शामिल होने वाले आवेदकों की लिस्ट जारी

यमुना प्राधिकरण ने अंतिम रूप से लॉटरी प्रक्रिया में शामिल होने वाले आवेदकों की सूची तीन अक्टूबर को अपने पोर्टल पर जारी कर दी है। आवेदकों की अधिक संख्या को देखते हुए इस बार इंडिया एक्सपो मार्ट में लॉटरी कराने का फैसला किया गया है, इसके बावजूद केवल एक प्रतिशत 1877 आवेदकों को ही लॉटरी में शामिल होने की अनुमति दी गई है।

एक प्रतिशत आवेदक मौके पर रहेंगे मौजूद

इन आवेदकों की मौजूदगी में उनके नाम की पर्ची निकाली जाएगी। यमुना प्राधिकरण के ओएसडी एवं लॉटरी प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए गठित समिति के अध्यक्ष शैलेंद्र भाटिया का कहना है कि आवेदकों की संख्या अधिक होने के कारण एक प्रतिशत को ही लॉटरी स्थल पर आने की अनुमति दी गई है।

अधिक संख्या में आवेदकों के आने से अव्यवस्था हो सकती है। जो आवेदक लॉटरी स्थल पर नहीं आ सकेंगे, वह यूट्यूब, फेसबुक आदि सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लॉटरी प्रकिया का सजीव प्रसारण देख सकेंगे। सभी श्रेणी की लॉटरी प्रक्रिया की फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी की जाएगी। पारदर्शी तरीके से लॉटरी प्रक्रिया को संपन्न कराया जाएगा।

यूपीआईटीएस जैसे आयोजनों से यूपी की बन रही नई पहचान

उमेश चतुर्वेदी

यूपीआईटीएस के आयोजन में एक पूरा और एक्सक्लूसिव हॉल इलेक्ट्रॉनिक्स का रहा, जिनमें देश के 100 से अधिक स्टार्टअप्स और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए और लोगों को अपनी तरक्की से प्रभावित किया।

पिछली सदी के अस्सी के दशक में जिस उत्तर प्रदेश को बीमारू कहकर उपहास उड़ाया जाता था, उसी यूपी में यूपीआईटीएस का भव्य आयोजन होना मामूली बात नहीं है। राज्य के तेजी से विकसित हो रहे ग्रेटर नोएडा शहर में 25 से 29 सितंबर तक चले उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो में देशभर की बड़ी कंपनियों का जुटान यह बताने के लिए काफी है कि राज्य में निवेश और कारोबार को लेकर भरोसा बढ़ रहा है।

चार दिनों तक चले यूपीआईटीएस का आयोजन 15 हॉल में किया गया था। वैसे तो अपने आप में सभी हॉल यूपी में आ रहे बदलाव और उसमें कारोबार और निवेश की दुनिया के दिग्गजों की दिलचस्पी की कहानी कह रहे थे। लेकिन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है, यूपी इन्वेस्ट का हॉल, जिसमें देश के तकरीबन सभी अहम क्षेत्रों की कंपनियों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। जिनमें देश की अग्रणी अडानी, अंबानी, रिलायंस, लुलु हाइपर मार्केट, वाइब्स जैसी कंपनियां शामिल रहीं।

इस आयोजन में एक पूरा और एक्सक्लूसिव हॉल इलेक्ट्रॉनिक्स का रहा, जिनमें देश के 100 से अधिक स्टार्टअप्स और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए और लोगों को अपनी तरक्की से प्रभावित किया। साल 2018 में राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने स्थानीय उत्पादों को बाजार और पहचान मुहैया कराने के लिए एक जिला, एक उत्पाद नाम से योजना शुरू की थी। जिसे संक्षेप में ओडीओपी के नाम से जाना जाता है। यूपीआईटीएस के इस आयोजन में ओडीओपी के लिए भी अलग से हॉल तैयार था, जिसमें राज्य के सभी 75 जिलों के 325 उत्पादक अपने स्थानीय विशेष उत्पादों के साथ मौजूद रहे। गौर करने की बात यह है कि इनमें काफी संख्या महिलाओं की रही। इस योजना के जरिए अपने उत्पादों को बाजार तक पहुंचा रहे कुछ दिव्यांग कारोबारी भी इसमें शामिल थे। इस आयोजन में पशुधन विकास, दुग्ध उद्योग, मत्स्य पालन, कृषि उत्पाद और खाद्य संरक्षण की भी कंपनियां शामिल रहीं और अपने उत्पादों को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। इस आयोजन में सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र फूड प्रोसेसिंग वाला हॉल रहा, जहां उत्तर प्रदेश के स्थानीय खाद्य उत्पादों और व्यंजनों को बतौर नमूने प्रस्तुत किया गया। लोगों ने उनके स्वाद का भरपूर लुत्फ उठाया और उनकी खरीददारी भी की।

इस आयोजन का 14 और 15 नंबर का हॉल निर्यातकों के लिए विशेष तौर पर आरक्षित था। जिसमें उत्तर प्रदेश के करीब सभी निर्यात होने वाले उत्पाद प्रदर्शित किए गए। ये हॉल विदेशी ग्राहकों को सबसे ज्यादा लुभाते दिखे। यहां जमकर खरीददारी भी हुई और ऑर्डर भी मिले। यहां यह भी बताना जरूरी है कि इसे देखने के लिए दुनियाभर से करीब 400 लोगों को आमंत्रित किया गया था। हालांकि कुछ विदेशी ग्राहक ऐसे भी थे, जो खुद यहां पहुंचे। विदेशी ग्राहकों और कंपनियों को यहां राज्य के उत्पादकों और निर्यातको को कारोबारी बैठक के लिए सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। जिसका राज्य को फायदा भी हुआ और करोड़ों रुपए के ऑर्डर भी मिले। ऊर्जा, नवीकरण ऊर्जा, और रक्षा उत्पाद को भी इस हॉल में प्रदर्शित किया गया था।

इस आयोजन में शिक्षा से जुड़ी तमाम संस्थाएं जिनमें कुछ बड़े विश्वविद्यालय भी शामिल थे, ने युवाओं को अपनी सुविधाओं और योजनाओं की जानकारी दी। पांच दिनों तक चले इस आयोजन में पांच सत्रों का आयोजन किया गया, जो ई कॉमर्स ट्रेंड्स और अवसर, नवाचार और स्टार्टअप्स, देश की निर्यात क्षमता, आदि पर आधारित थे। इस आयोजन में रोजाना शाम 4 बजे से रात 9 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी प्रस्तुत किया गया। पांच दिनों के इस आयोजन में यहां आए लोगों को जौनपुर और लखनऊ के टुंडे कबाब, बलिया का लिट्टी-चोखा, कानपुर की चाट, खुर्जा की खुरचन, आगरा का पंछी पेठा, मथुरा का पेड़ा और बनारस का पान आदि राज्य के खांटी देसज व्यंजनों का स्वाद भी चखने को मिला।

इस आयोजन की उपलब्धि ही कही जाएगी कि आयोजन के चौथे दिन उद्यमियों को अमेरिका, फ्रांस और जापानी कंपनियों से 100 करोड़ रुपए से अधिक के ऑर्डर प्राप्त हुए। इस दौरान बिरला एयरकॉन और सोनी के बीच जहां 50 करोड़ का करार हुआ, वहीं मदरसन कंपनी को 25 करोड़ के ऑर्डर मिले। इसी तरह आइसक्रीम की मशहूर कंपनी वडीलाल और जैन शिकंजी को 10-10 करोड़ रुपए के ऑर्डर मिले। पूरे आयोजन में करीब 5 लाख से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

इस आयोजन की उपलब्धि ही कही जाएगी कि आयोजन के चौथे दिन उद्यमियों को अमेरिका, फ्रांस और जापानी कंपनियों से 100 करोड़ रुपए से अधिक के ऑर्डर प्राप्त हुए। इस दौरान बिरला एयरकॉन और सोनी के बीच जहां 50 करोड़ का करार हुआ, वहीं मदरसन कंपनी को 25 करोड़ के ऑर्डर मिले। इसी तरह आइसक्रीम की मशहूर कंपनी वडीलाल और जैन शिकंजी को 10-10 करोड़ रुपए के ऑर्डर मिले। पूरे आयोजन में करीब 5 लाख से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

यूपीआईटीएस 2024 का सहयोगी आयोजक वियतनाम रहा। जिसके राजदूत की अगुआई में एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान वियतनाम ने राज्य में खाद्य प्रसंस्करण एवं आईटी के क्षेत्र में निवेश को लेकर उत्सुकता जाहिर की। इस मौके पर पिछले साल यानी 2023 के आयोजन की याद आना स्वाभाविक है। तब आयोजन के पहले दिन यानी 21 सितंबर को अपेक्षाकृत कम भीड़ देखने को मिली थी, हालांकि बाद के हर दिन को लोगों के आने का सिलसिला बढ़ता ही गया। दूसरे दिन 48 हजार लोग मेले में पहुंचे थे। वहीं तीसरे दिन मेले में आने वालों की संख्या बढ़कर 70 हजार पहुंच गई। चौथे दिन 88 हजार से अधिक जबकि पांचवें और अंतिम दिन संख्या 90 हजार के पार पहुंच गई।

बहरहाल यूपीआईटीएस के बीते आयोजन में राज्य के हस्तशिल्प उद्योग को नई उड़ान मिली है। इस दौरान राज्य के हस्तशिल्प उत्पादों की जबरदस्त खरीदारी हुई। इस आयोजन के दौरान 75 हजार कारोबारी निर्यात के ऑर्डर भी मिले। इससे ऐसा लगता है कि राज्य के लघु उद्योगों को नई पहचान मिल रही है। इस बार का आयोजन पिछली बार की तुलना में एक कदम आगे रहा है। कभी उत्तर प्रदेश को भदेस और उसके उत्पादों को उपहास की नजर से देखा जाता था। लेकिन यूपीआईटीएस जैसे आयोजनों के चलते उत्तर प्रदेश की पहचान भदेस से निकल रही है और राज्य नए सिरे से ना सिर्फ अपनी पहचान हासिल करता दिख रहा है, बल्कि राज्य के हस्तशिल्प और दूसरे उत्पादों को वैश्विक बाजार मिलता दिख रहा है।

- :सौजन्य :-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर

मेरठ में नवरात्रि के दौरान तीन दिनों में इलेक्ट्रिक वाहनों की रिकॉर्ड बिक्री

परिवहन विशेष न्यूज

पर्यावरण के प्रति जागरूक मेरठ के लोग अब पेट्रोल, डीजल और सीएनजी वाहनों की जगह इलेक्ट्रिक वाहनों को तरजीह दे रहे हैं। नवरात्र के पहले तीन दिनों में कार और स्कूटर समेत 160 इलेक्ट्रिक वाहन बिके। इनमें 40 कारें और 120 स्कूटर और स्कूटी शामिल हैं। डीलरों के मुताबिक यह अब तक की रिकॉर्ड बिक्री है। बड़ी संख्या में लोग ईवी वाहनों के बारे में जानकारी लेने शोरूम पहुंच रहे हैं। टाटा, महिंद्रा और एमजी समेत तमाम ईवी वाहनों की मांग काफी बढ़ गई है।

टाटा मोटर्स के डीलर वासु ऑटोमोबाइल के डायरेक्टर गौरव गुप्ता ने बताया कि नवरात्रि में कंपनी की टियागो, पंच, नेक्सन समेत 15 कारें बिकीं। टाटा की कर्व एक बार चार्ज करने पर 500 किमी चलती है। इसकी बुकिंग भी अच्छी हुई है। इसके लिए 30 दिन का वेटिंग पीरियड है। दशहरे तक कई कारों की डिलीवरी हो जाएगी।

टाटा अंजनेया के एमडी शलभ गुप्ता ने कहा कि टाटा की चारों ईवी कारें मांग में हैं।

एमडीए डीलर विवेक ने बताया कि एमजी विंडसर की 10 कारों की बुकिंग हो चुकी है। इनकी डिलीवरी दशहरा के बाद शुरू होगी। एमजी जेडएस ईवी और कॉमेट की बाजार में अच्छी मांग है।

किआ और महिंद्रा के डीलर सिद्धार्थ जैन ने बताया कि नवरात्रि के दौरान दो किआ ईवी6 कारों की डिलीवरी हुई। इसकी कीमत 60 लाख रुपये है। इसके अलावा 15 महिंद्रा एक्सयूवी400 कारें बिकीं।

सेमीकंडक्टर, ग्रीन एनर्जी और ईवी सेक्टर में लोगों की कमी, टाटा ग्रुप, रिलायंस इंडस्ट्रीज और अडानी ग्रुप को विदेश से करनी पड़ रही भर्ती

परिवहन विशेष न्यूज

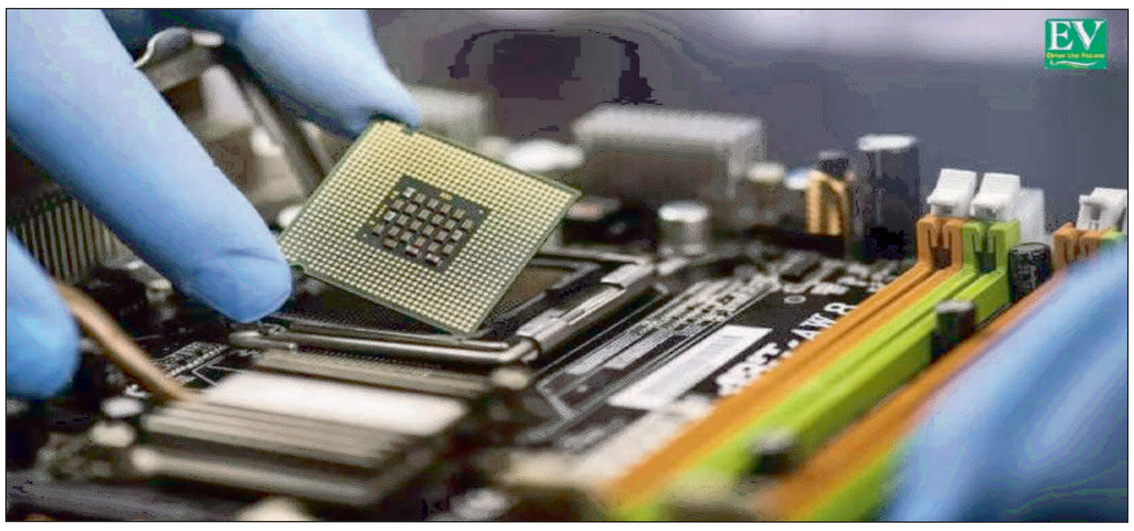

टाटा समूह, रिलायंस इंडस्ट्रीज, अदानी समूह, वेदांता, लार्सन एंड टुब्रो और जेएसडब्ल्यू समूह जैसे भारत के प्रमुख समूह अब अपने नए व्यवसायों के लिए विदेशों से कर्मचारियों की भर्ती कर रहे हैं। ये व्यवसाय मुख्य रूप से अक्षय ऊर्जा, सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी), हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा और बैटरी एवं सेल प्रौद्योगिकी से संबंधित हैं।

कंपनी के शीर्ष अधिकारियों और प्रतिभा खोज विशेषज्ञों के अनुसार ये कंपनियां स्थानीय स्तर पर प्रतिभा की भारी कमी को दूर करने के लिए तेजी से कदम उठा रही हैं और अपनी महत्वाकांक्षी विस्तार योजनाओं को साकार करने का प्रयास कर रही हैं।

इन समूहों ने फिलीपींस, मलेशिया, हांगकांग, ताइवान, जापान, वियतनाम, अमेरिका और यूरोप जैसे देशों से पेशेवरों की भर्ती करने का फैसला किया है। मुख्य रूप से वरिष्ठ नेतृत्व स्तर पर भर्ती की जा रही है। वैश्विक कार्यकारी खोज और मानव संसाधन परामर्श फर्म कॉर्न फेरी के अध्यक्ष और क्षेत्रीय प्रबंध निदेशक नवनीत सिंह ने कहा, ₹बात यह है कि बैटरी, ईवी, सेमीकंडक्टर, हाइड्रोजन और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों की कई कंपनियां वापस लौटने वाले भारतीयों और विदेशी पेशेवरों को काम पर रखने की कोशिश कर रही हैं।₹

टाटा समूह गुजरात के धोलेरा में एआई-सक्षम सेमीकंडक्टर विनिर्माण सुविधा स्थापित करने के लिए ताइवान के पावरचिप सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन के साथ साझेदारी कर रहा है। मुंबई स्थित इस समूह ने ताइवान से उच्च गुणवत्ता वाले अनुभवी प्रतिभाओं की तलाश शुरू कर दी है। कंपनी के एक अधिकारी ने कहा कि समूह के इलेक्ट्रॉनिक्स अनुबंध विनिर्माण व्यवसाय टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने अब तक 400 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया है और चिप निर्माण के लिए आवश्यक विशेष कौशल सीखने के लिए और अधिक कर्मचारी ताइवान जाएंगे।

टाटा समूह ने इस परियोजना के लिए 91,000 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया है, जिससे 20,000 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कुशल नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है। इसके अलावा टाटा समूह की मल्टी-फ़ैब दृष्टिकोण धोलेरा में 1,00,000 से अधिक कुशल नौकरियां पैदा करने की योजना है।

2030 तक 50 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य लेकर चल रहे अडानी समूह ने महाराष्ट्र के तलोजा में सेमीकंडक्टर चिप निर्माण संयंत्र स्थापित करने के लिए इजरायल के टॉवर सेमीकंडक्टर के साथ साझेदारी की है। इसके लिए अडानी विशेष रूप से डिजिटल और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में विदेशी पेशेवरों की भर्ती भी कर रहा है। सील एचआर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आदित्य नारायण मिश्रा ने कहा कि कंपनियाँ नए कौशल क्षेत्रों में प्रतिभाएँ खोजने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उन्होंने कहा, ₹एशिया प्रशांत क्षेत्र से वरिष्ठ पदों के लिए लोगों की मांग में जबरदस्त वृद्धि हुई है।"

भारतीय और यूरोपीय संघ के स्टार्टअप ईवी बैटरी रीसाइक्लिंग में व्यावसायिक सहयोग को दे रहे बढ़ावा

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिक वाहन बैटरियों का पुनर्चक्रण भू-राजनीतिक और जलवायु संबंधी अनिवार्यता है। सरकार के अनुसार इस क्षेत्र में भारतीय और यूरोपीय स्टार्टअप नवाचार और व्यावसायिक सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय ने यूरोपीय संघ के एक प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। बैठक में भारत और यूरोपीय संघ की नवाचार, स्थिरता और अर्थव्यवस्था के परिवर्तन के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया।

इसमें यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के बैटरी रीसाइक्लिंग प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में स्टार्टअप के प्रतिनिधि, भारत में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल के अधिकारी और चुनिंदा भारतीय स्टार्टअप के सदस्य शामिल थे। सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रोफेसर अजय कुमार सूद ने कहा कि यह सहयोग ₹प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, बाजार पहुंच और सह-विकास के लिए नए अवसर पैदा करता है। आर्थिक लचीलापन और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है।₹

यह बैठक राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भारत-यूरोपीय संघ व्यापार एवं प्रौद्योगिकी परिषद (टीटीसी) कार्य समूह 2 (डब्ल्यूजी 2) के तहत आयोजित की गई थी। भारत में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल की उप प्रमुख डॉ. इवा सुवारा ने कहा कि व्यापार एवं प्रौद्योगिकी परिषद के सहयोग से ₹हम यूरोपीय संघ और भारतीय स्टार्टअप को एक साथ आने, नवाचार में अग्रणी बनने, व्यापार सहयोग को बढ़ावा देने और अत्याधुनिक तकनीकों को बाजार में लाने में मदद करने में सक्षम हैं।₹

बैठक में ईवी बैटरी रीसाइक्लिंग प्रौद्योगिकियों के महत्वपूर्ण क्षेत्र में भारतीय और यूरोपीय स्टार्टअप के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में हुई प्रगति पर ध्यान केंद्रित किया गया। भारत से भाग लेने वाले स्टार्टअप में बाटेक्स एनर्जीज, एवरग्रीन लिथियम रीसाइक्लिंग, एलडब्ल्यू 3 प्राइवेट लिमिटेड और लोहुम शामिल थे, जबकि यूरोपीय संघ के स्टार्टअप में इकोमेट रिफाइनिंग और एनेरिस शामिल थे।

भारत-यूरोपीय संघ टीटीसी की घोषणा यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अप्रैल 2022 में की थी। इसे फरवरी 2023 में स्थापित किया गया था। यह तंत्र दोनों पक्षों को व्यापार, विश्वसनीय प्रौद्योगिकी और सुरक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम बनाता है।

भारतीय बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने Nissan लॉन्च करेगी 3 नई एसयूवी, CNG, Hybrid और EV पर भी दी जानकारी

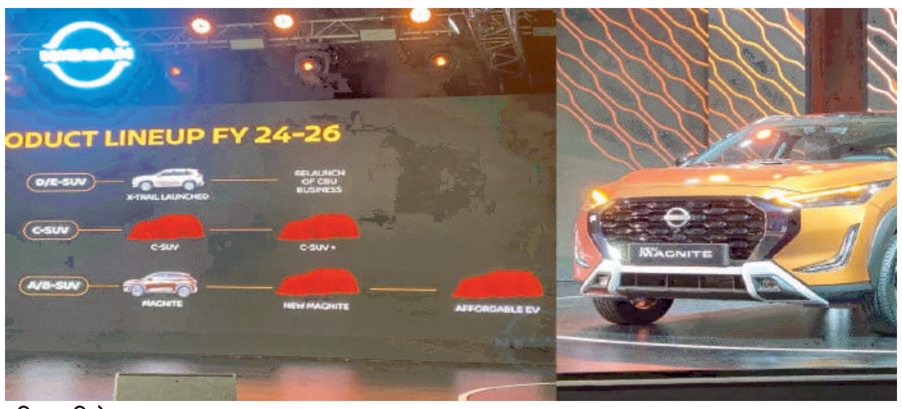

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता Nissan की ओर से भारतीय बाजार में अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाने के साथ ही पोर्टफोलियो को भी बढ़ाने का एलान कर दिया गया है। कंपनी की ओर से किस सेगमेंट में कब तक किस गाड़ी को लाया जा सकता है। क्‍या कंपनी CNG Hybrid तकनीक वाले वाहनों को भी ला सकती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। वाहन निर्माता Nissan की ओर से भारतीय बाजार में चार अक्टूबर 2024 को ही बी सेगमेंट एसयूवी के तौर पर Magnite Facelift को लॉन्च किया गया है। इसके साथ ही कंपनी ने अपने पोर्टफोलियो को बढ़ाने का एलान भी कर दिया है। निसान की ओर से कब तक और किस सेगमेंट में किस तरह की तकनीक के साथ नए वाहनों को लाने की तैयारी की जा रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Nissan बढ़ाएगी पोर्टफोलियो

जापानी वाहन निर्माता Nissan की ओर से Magnite के Facelift वर्जन को लॉन्च करने के साथ ही यह भी घोषणा कर दी गई है कि कंपनी अगले 30 महीनों के दौरान अपने पोर्टफोलियो को बढ़ाएगी। मौजूदा दो एसयूवी की जगह कंपनी के पोर्टफोलियो में कुल पांच एसयूवी हो जाएंगी। पोर्टफोलियो को बढ़ाने की घोषणा के साथ ही यह भी साफ कर दिया गया है कि निसान का फोकस सिर्फ एसयूवी सेगमेंट के वाहनों पर ही होगा। कंपनी हैचबैक, सेडान या एमपीवी सेगमेंट में अगले 30 महीनों के दौरान नई गाड़ी को लॉन्च नहीं करेगी।

बाजार में कितनी है हिस्सेदारी

निसान के अधिकारियों ने इस बात की जानकारी भी दी है कि अभी भारतीय बाजार में कंपनी की हिस्सेदारी सिर्फ एक फीसदी की है। लेकिन अगले कुछ महीनों में कंपनी की योजना इसे बढ़ाकर तीन फीसदी तक करने की है। बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए ही निसान की ओर से नए वाहनों को लॉन्च किया जाएगा।

भारत में ही बनाएगी नए वाहन

निसान की ओर से यह भी जानकारी दी गई है कि जल्द लॉन्च किए जाने वाले वाहनों को भारत में ही बनाया जाएगा। मेड इन इंडिया वाहनों को मैग्नाइट की तरह ही दुनिया के कई देशों में एक्सपोर्ट भी किया जाएगा।

किस सेगमेंट में कौन सी एसयूवी

निसान की योजना अगले तीस महीनों के दौरान तीन और एसयूवी को भारत के बाजार में लॉन्च करने की है। इनमें से एक इलेक्ट्रिक एसयूवी भी लॉन्च की जाएगी। इलेक्ट्रिक एसयूवी को कम बजट वाले सेगमेंट में लाया जाएगा, लेकिन अभी यह साफ नहीं किया गया है कि क्या वह मैग्नाइट का इलेक्ट्रिक वर्जन होगा या फिर पूरी तरह से नए प्लेटफॉर्म पर इसे लॉन्च किया जाएगा। इसके अलावा कंपनी सी सेगमेंट की दो एसयूवी को भी लॉन्च करेगी। जिसमें से एक को फाइव सीट एसयूवी के तौर पर लाया जाएगा और दूसरी एसयूवी को पांच से सात सीटों के विकल्प में लॉन्च किया जाएगा।

CNG और Hybrid तकनीक पर कही यह बात

कंपनी की ओर से बताया गया है कि उनके पास पेट्रोल इंजन के साथ ही सीएनजी और हाइब्रिड तकनीक भी मौजूद है। लेकिन, समय के साथ ही इलेक्ट्रिक, हाइब्रिड और सीएनजी तकनीक को वाहनों में ऑफर किया जाएगा।

कब से भारत में है Nissan

निसान जापानी वाहन निर्माता है। जो दुनिया के कई देशों में अपने वाहनों की बिक्री करती है। भारतीय बाजार में निसान ने साल 2005 में एंट्री ली थी। कंपनी की पहली गाड़ी X-Trail थी जिसे सीबीयू के तौर पर कुछ समय पहले फिर से लाया गया है। इसके अलावा कंपनी के पोर्टफोलियो में Nissan Magnite एसयूवी भी है।

ओला के संस्थापक भाविश अग्रवाल और स्टैंड अप कॉमेडियन कुणाल कामरा के बीच सेवा गुणवत्ता के मुद्दे पर सोशल मीडिया पर छिड़ा वाकयुद्ध

परिवहन विशेष न्यूज

ओला के संस्थापक भाविश अग्रवाल और स्टैंड-अप कॉमेडियन कुणाल कामरा के बीच रविवार, 06 अक्टूबर को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कंपनी के इलेक्ट्रिक स्कूटर की बिक्री और सेवा की गुणवत्ता को लेकर वाकयुद्ध छिड़ गया। इसकी शुरुआत तब हुई जब कामरा ने एक्स पर अग्रवाल द्वारा ओला की गिगाफैक्ट्री की एक तस्वीर पोस्ट करने के बाद जवाब दिया, जिसमें कई ओला इलेक्ट्रिक स्कूटर एक साथ खड़े थे और सर्विसिंग के लिए इंतजार कर रहे थे।

कामरा ने फोटो के साथ लिखा, ₹क्या भारतीय उपभोक्ताओं के पास कोई आवाज़ है? क्या वे इसके लायक हैं? दो पहिया वाहन कई दिहाड़ी मज़दूरों की जीवनरेखा हैं'₹उन्होंने केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को टैग करते हुए पूछाः ₹क्या इस तरह से भारतीय ईवी का इस्तेमाल करेंगे?₹ कॉमेडियन ने भारत सरकार के उपभोक्ता मामलों के विभाग के आधिकारिक हैंडल @jagograhakjago को भी टैग किया और जवाब मांगा, ₹कोई शब्द?₹ कामरा ने आगे लिखा, ₹जिस किसी को भी ओला इलेक्ट्रिक से कोई समस्या है, वह अपनी कहानी नीचे सभी को टैग करते हुए छोड़ दें'₹. 'इस पेड ट्वीट के लिए आपको जितना कमाया है, उससे ज़्यादा देंगे': भाविश अग्रवाल ने कुणाल कामरा की आलोचना की, जब कॉमेडियन ने डीलरशिप के बाहर ओला इलेक्ट्रिक स्कूटर के संचालन की आलोचना की।

इस पर अग्रवाल ने जवाब दिया, ₹चूंकि आप बहुत परवाह करते हैं @kunalkamra88, तो आइए और हमारी मदद कीजिए! मैं आपके इस पेड ट्वीट या आपके असफल कॉमेडी करियर से भी ज़्यादा पैसे दूंगा या फिर चुप बैठिए और हमें असली ग्राहकों की समस्याओं को ठीक करने पर ध्यान केंद्रित करने दीजिए।₹ उन्होंने आगे कहा, ₹हम तेजी से सेवा नेटवर्क का विस्तार कर रहे हैं और जल्द ही बैकलॉग को साफ कर दिया जाएगा।"

अग्रवाल की ₹असफल कॉमेडी करियर₹ टिप्पणी पर कामरा ने दर्शकों की तालियों और जयकारों के साथ उनके एक शो का वीडियो क्लिप पोस्ट करके जवाब दिया और ओला इलेक्ट्रिक के संस्थापक और सीएमडी को ₹घमंडी और घटिया₹ कहा। जवाब में अग्रवाल ने कहा, ₹चोट लगी? दर्द हुआ? आजा सर्विस सेंटर। बहुत काम है। मैं आपके फ्लॉप शो से बेहतर पैसे दूंगा।"

इसके बाद कामरा ने अग्रवाल को चुनौती दी कि ₹जो कोई भी अपनी ओला ईवी वापस करना चाहता है और जिसने इसे पिछले चार महीनों में खरीदा है, उसे पूरा पैसा वापस कर दें₹, उन्होंने कहा कि उन्हें अपने पैसे की ज़रूरत नहीं है, लेकिन ₹जो लोग अपने कार्यस्थल पर नहीं पहुँच पा रहे हैं, उन्हें आपकी जवाबदेही की ज़रूरत है₹। कामरा ने ज़ोर देकर कहा, ₹अपने ग्राहकों को दिखाएँ कि आप वाकई उनकी परवाह करते हैं।₹ अग्रवाल ने जवाब देते हुए कहा, ₹अगर हमारे ग्राहकों को सेवा में देरी का सामना करना पड़ता है, तो हमारे पास उनके लिए पर्याप्त कार्यक्रम हैं। अगर आप सच्चे होते, तो आपको पता होता। फिर से, इस मामले से पीछे हटने की कोशिश न करें। आरामकुर्सी पर आलोचना करने के बजाय आकर कुछ वास्तविक काम करें।₹ ओला के सीईओ भाविश अग्रवाल ने एक दिन की त्वरित सेवा गारंटी, एआई संचालित रखरखाव और बहुत कुछ के साथ ग्राहकों के लिए 'हाइपर सर्विस' शुरू की।

समाचार लिखे जाने तक अग्रवाल द्वारा किए गए ट्वीट में कहा गया है कि ₹कॉमेडियन बन न सके, चौधरी बनने चले। अगली बार अपनी रिसर्च बेहतर तरीके से करें और हमारे सर्विस सेंटर में आकर हमारी मदद करने का ऑफर खुला है। चुनौती स्वीकार करें। शायद आप बदलाव के लिए कुछ वास्तविक कौशल सीख सकें।"

सोशल मीडिया विवाद कुछ लोगों के लिए मनोरंजक होने के साथ-साथ ओला ग्राहकों की वास्तविक कुंठाओं को उजागर किया, जिनमें से कई ने सेवा की गुणवत्ता के बारे में चिंताओं को दोहराया और अपने स्वयं के अनुभव को साझा किया।

दो सार्वजनिक हस्तियों के बीच शब्दों की लड़ाई के रूप में शुरू हुआ यह विवाद जल्द ही भारत के बढ़ते इलेक्ट्रिक वाहन बाजार में जवाबदेही के बारे में एक बड़ी बातचीत में बदल गया।

₹यह सब मज़ेदार है और सब भाविश सर। लेकिन लोगों की सभी शिकायतों के साथ ओला स्कूटर का भविष्य अच्छा नहीं लग रहा है। कुणाल पर व्यक्तिगत रूप से हमला करने के बजाय, लोगों को 80k और बढ़ती शिकायतों को हल करने की योजना बताने के लिए मंच का उपयोग करने का प्रयास करें।"

एक उपयोगकर्ता ने लिखा जबकि दूसरे ने कहा, ₹शायद उससे लड़ने के बजाय, आपको पहले से ही अच्छी गुणवत्ता वाले वाहन बनाना शुरू कर देना चाहिए, ताकि वे इतनी बार खराब न हों कि आपको इतने सारे सर्विस सेंटर और सर्विस पर्सन रखने की आवश्यकता हो।

वन नेशन वन इलेक्शन आज के भारत की

विजय गर्ग

किसी भी देश की लोकतंत्रीय प्रणाली में समय पर चुनाव कराना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। चुनाव किस प्रकार हों, समय पर हों एवं सही तरीके से हों, इसका बहुत महत्व होता है। परंतु देश में चुनाव बार बार होना भी अपने आप में ठीक स्थिति नहीं कही जा सकती है।

प्रह्लाद सबनानी

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में लोकसभा एवं विभिन्न प्रदेशों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ ही होते रहे हैं। परंतु केंद्र सरकार द्वारा कुछ विधानसभाओं को 1950 एवं 1960 के दशक में इनकी अवधि समाप्त होने के पूर्व ही भंग करने के चलते कुछ विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा से अलग कराने की आवश्यकता पड़ी थी, उसके बाद से लोकसभा, विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं एवं स्थानीय स्तर पर नगर निगमों, निकायों एवं पंचायतों के चुनाव अलग अलग समय पर कराए जाने लगे। आज स्थिति यह निर्मित हो गई है कि लगभग प्रत्येक सप्ताह अथवा प्रत्येक माह भारत के किसी न किसी भाग में चुनाव हो रहे होते हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि पिछले पांच वर्षों के दौरान प्रत्येक वर्ष केवल 65 दिन ऐसे रहे हैं जब भारत के किसी स्थान पर चुनाव नहीं हुए हैं।

किसी भी देश में चुनाव कराए जाने पर न केवल धन खर्च होता है बल्कि जनबल का उपयोग भी करना पड़ता है। जनबल का यह उपयोग एक तरह से अनुत्पादक श्रम की श्रेणी में गिना जाना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के श्रम से किसी प्रकार का उत्पादन तो होता नहीं है परंतु एक तरह से श्रमदान जरूर करना होता है। यह श्रम यदि बचाकर किसी उत्पादक कार्य में लगाया जाय तो केवल कल्पना ही की जा सकती है कि इस श्रम से देश के सकल घरेलू उत्पाद में अतुलनीय वृद्धि दर्ज की जा सकती है। अमेरिकी थिंक टैंक के एक अर्थशास्त्री के अनुसार, देश में बार बार चुनाव कराए जाने के चलते उस देश का सकल घरेलू उत्पाद लगभग एक प्रतिशत से कम हो जाता है। चुनाव कराने के लिए होने वाले खर्च पर भी यदि विचार किया जाय तो भारत में केवल लोकसभा चुनाव कराने के लिए ही 60,000 करोड़ रुपए का खर्च किया जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं इस राशि में यदि विभिन्न प्रदेशों की विधानसभाओं, नगर निगमों, निकायों एवं ग्राम पंचायतों के चुनाव पर किए जाने वाले खर्च को भी जोड़ा जाय तो खर्च का यह आंकड़ा निश्चित ही एक लाख करोड़ रुपए के आंकड़ें को पार कर जाएगा।

उक्त बातों के ध्यान में आने के पश्चात केंद्र सरकार ने विचार किया है कि भारत में "वन नेशन वन इलेक्शन" के नियम को लागू किया जाना चाहिए। इस विचार को आगे बढ़ाने एवं इस संदर्भ में नियम आदि बनाने के उद्देश्य से भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी की अध्यक्षता में एक विशेष समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट हाल ही में राष्ट्रपति/केंद्र सरकार को सौंप दी है। इसके बाद, केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल की समिति ने इस रिपोर्ट को स्वीकृत कर लिया है एवं इसे अब लोकसभा एवं राज्यसभा के सामने विचार के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

किसी भी देश की लोकतंत्रीय प्रणाली में समय पर चुनाव कराना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। चुनाव किस प्रकार हों, समय पर हों एवं सही तरीके से हों, इसका बहुत महत्व होता है। परंतु देश में चुनाव बार बार होना भी अपने आप में ठीक स्थिति नहीं कही जा सकती है। विश्व के कई देशों, यथा स्वीडन, ब्राजील, बेलजियम, दक्षिण अफ्रीका, आदि में समस्त प्रकार के चुनाव एक साथ ही कराए जाने के नियम का पालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। चुनाव एक साथ कराने के कई फायदे हैं जैसे इन देशों में चुनाव कराने सम्बंधी खर्चों पर नियंत्रण रहता है। दूसरे, सुरक्षा हेतु पुलिसकर्मियों एवं चुनाव करवाने के लिए स्थानीय कर्मचारियों की बड़ी मात्रा में आवश्यकता को कम किया जा सकता है। तीसरे, देश में चुनाव एक साथ कराने से अभिशासन पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है एवं चौथे विभिन्न स्तर के चुनाव एक साथ कराने से चुनाव में वोट डालने वाले नागरिकों की संख्या में निश्चित ही वृद्धि होती है क्योंकि नागरिकों को मालूम होता है कि पांच साल में केवल एक बार ही वोट डालना है अतः वह अन्य कार्यों को दरकिनार करते हुए अपने वोट डालने के अधिकार का उपयोग करना पसंद करता है। इसी प्रकार यदि कोई नागरिक किसी अन्य नगर यथा दिल्ली में कार्य कर रहा है और उसके मुंबई का निवासी होने चलते उसे वोट डालने के लिए मुंबई जाना होता है तो पांच वर्ष में एक बार तो इस महान कार्य के लिए वह दिल्ली से मुंबई आ सकता है परंतु पांच वर्षों में पांच बार तो वह दिल्ली से मुंबई नहीं जा पाएगा। इसके अलावा लोकसभा, विधानसभाओं, स्थानीय निकायों एवं पंचायतों के चुनाव अलग अलग होने से विभिन्न पार्टियों के पदाधिकारी, इनमें केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों के मंत्री आदि भी शामिल रहते हैं, अपना सरकारी कार्य छोड़कर चुनाव प्रचार के लिए अपना समय देते हैं। जबकि, यह समय तो उन्हें देश एवं प्रदेश की सेवा में लगाना चाहिए। इससे देश में अभिशासन की गुणवत्ता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

वन नेशन वन इलेक्शन के लिए गठित उक्त विशेष समिति ने यह सलाह दी है कि शुरुआत में लोकसभा एवं समस्त प्रदेशों की विधान सभाओं के चुनाव एक साथ कराए जा सकते है। यदि ऐसा होता है तो यह भी सही है कि देश में लोकसभा एवं विधान सभा चुनाव एक साथ कराने के लिए संसाधनों की भारी मात्रा में आवश्यकता पड़ेगी, इसका हल किस प्रकार निकाला जाएगा इस पर भारतीय संसद में विचार किया जा सकता है। साथ ही, भारत में 6 राष्ट्रीय दल, 54 राज्य स्तरीय दल एवं 2000 से अधिक गैर मान्यता प्राप्त दल हैं जिनके बीच में सामंजस्य स्थापित करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही, भारत में अंतिम बार लोकसभा एवं विधानसभाओं के चुनाव एक साथ 1960 के दशक में कराए गए थे। आज भारतीय नागरिकों को भी शिक्षित करने की आवश्यकता होगी कि लोकसभा, विधान सभाओं एवं स्थानीय निकायों के चुनाव एक साथ किस प्रकार कराए जा सकते हैं ताकि उन्हें वोट डालने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। इन समस्याओं का हल भारतीय संसद में चर्चा के दौरान निकाला जा सकता है। यदि किसी कारण से केंद्र में लोकसभा अथवा किसी प्रदेश में विधानसभा पांच वर्ष की समय सीमा के पूर्व ही गिर जाती है तो लोकसभा अथवा उस प्रदेश की विधान सभा के चुनाव शेष बचे हुए समय के लिए पुनः कराए जा सकते हैं, ऐसे प्रावधान को कानूनी रूप प्रदान दिया जा सकता है। इससे विभिन्न राजनैतिक दलों के सांसदों एवं विधायकों पर भी यह दबाव रहेगा कि वे लोकसभा अथवा विधानसभा को समय पूर्व भंग कराने अथवा गिराने का प्रयास नहीं करें। वन नेशन वन इलेक्शन के सम्बंध में कुछ संशोधन तो देश के वर्तमान कानून में करने ही होंगे और फिर पूर्व में भी विभिन्न विषयों पर अलग अलग खंडकाल में (समय समय पर) 100 बार से अधिक संशोधन कानून में किए ही जा चुके हैं।

यह तर्क भी सही नहीं है कि देश में एक साथ चुनाव कराने से भारत के नागरिक केंद्र एवं राज्यों में एक ही राजनैतिक दल की सरकार चुनने को प्रोत्साहित होंगे। परंतु, भारत का नागरिक अब पूर्ण रूप से परिपक्व एवं सक्षम हो चुका है कि वह लोकसभा एवं विधान सभा चुनाव एक साथ कराए जाने पर केवल एक ही दल की सरकार को नहीं चुनेगा। देश में ऐसा कई बार हुआ है कि लोकसभा एवं विधान सभा के एक साथ हुए चुनवा में लोकसभा में एक दल के सांसद को चुना गया है एवं विधान सभा में किसी अन्य दल के विधायक को चुना गया है।

भारत आज एक विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है, ऐसे समय में भारत को अपने संसाधनों का उत्पादक कार्यों के लिए उपयोग करना आवश्यक होगा न कि रक्षा एवं सरकारी कर्मचारी देश में बार बार हो रहे चुनाव के कार्यों में व्यस्त रहें। कुल मिलाकर वन नेशन वन इलेक्शन, देश के हित में उठाया जा रहा एक मजबूत कदम है। इस विषय पर, भारत के हित में, देश के समस्त राजनैतिक दलों को गम्भीरता से विचार कर इस नियम को भारत में लागू किया जाना चाहिए।

संपादक की कलम से

भीख से भविष्य तक डा. पिंकी

वह भीख के माहौल में पैदा हुई, लेकिन चलने के लिए एक समाज सेवी संस्था का सहारा मिला तो आंखों में चमक और भविष्य का रास्ता दिखाई दिया। कल तक जिन हाथों में भीख का कटोरा था, आज स्टैथोस्कोप के साथ वह डाक्टरी पेशे की पहचान बन चुकी है। इस अद्भुत सफलता की कहानी की किरदार है डा. पिंकी हरयान। धर्मशाला की झुग्गी-झोंपड़ी से चीन के मेडिकल कालेज से मेडिकल की पढ़ाई करके लौटी एक बेटी। उसने अपनी भूख को भविष्य बना लिया, अपने ही कदमों पर मानवता को चला लिया। यह एक ऐसी कहानी है जिसके सबक व्यक्तिगत हैं और सामाजिक भी। इससे राष्ट्रीय नीतियां, कार्यक्रम और परिवेश की हकीकत सामने आ जाती है। 'वहां कितने आईने हर लम्हे टूटे होंगे, जहां तेरी तस्वीर मुकम्मल हुई होगी।' आज भीख के दानों को भी गुरूर आया होगा, सामने जब डा. पिंकी का सफर आया होगा। वो चली तो मकलोडगंज की गलियों में हाथ फैलाए मांगने, लेकिन टोंगलेन चैरिटेबल ट्रस्ट ने उसे जीवन के साथ चलना सिखा दिया। साढ़े चार साल की बच्ची को बीस साल के सफर ने धर्मशाला की झोंपड़ी से चिकित्सा जगत की पायदान तक पहुंचा दिया। यह महज इत्तफाक नहीं, श्रम नहीं, रिकार्ड नहीं, बल्कि जीने का दीपक जलाने का प्रयास है। पिंकी के जीवन के अंधेरे आज भी देश की झुग्गी-झोंपडियों में आबाद हैं, लेकिन न वहां कोई 'टोंगलेन' जैसी संस्था पहुंची और न ही वहां के सपने बदले। पिंकी और डा. पिंकी के बीच सपनों की बुनियाद, आगे बढने की इच्छाशक्ति और जीवन को पढने-गढने की प्रतिज्ञा ने पिछले दो दशकों के सारे इम्तिहान और परिणाम सामने ला दिए। यूं तो यही काम आजादी के बाद से जारी है। सरकारों के लक्ष्य हमेशा तपते सूरज के नीचे उत्थान की रोशनी और समाज की बेडियों के समक्ष, कई विकल्प-कई समाधान लिए खड़े हैं, लेकिन जहां प्रयत्न गैर सरकारी मंच पर अनुकरणीय हो जाएं, वहां दिशाएं बदलती हैं। एक अकल्पनीय शक्ति ने पेट भरने की मजबूरी को आगे बढने की लालसा में बदल दिया।

देश अस्सी करोड़ लोगों की भूख मिटाने के लिए मुफ्त राशन दे रहा है, लेकिन क्या वहां पिंकी को उसके मुकाम के सपने मिल जाएंगे। क्या पिंकी के सपने साधारण, सामाजिक व राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में संभव हैं। क्या सरकारी स्कूल के हर बच्चे को हम पिंकी बनाने का रास्ता दिखा रहे हैं। टोंगलेन ने यह अंतर पैदा किया। संस्था ने झुग्गी को तमाम व्यसनों से दूर महकना सिखाया, नतीजतन एक छोटा सा पिंकी नाम का दीया अब सूरज की तरह प्रकाशमान है। ऐसी कहानियां और भी होंगी और असाधारण सफलताओं के उदाहरण कम नहीं, लेकिन यहां किरदार हमसे सवाल पूछ रहा है। दिशा के हालात से पूछ रहा है कि हम ऐसे परिदृश्यों में झांकते क्यों नहीं और हमारी नीतियों की गूंज के बावजूद, विश्व की सबसे बड़ी झोंपड़पट्टी धारावी में देश क्यों आज भी मजबूर-अपाहिज खड़ा है। भारत में टोंगलेन चैरिटेबल ट्रस्ट के संचालक जामयांग ने साबित कर दिया कि गरीबी और भूख के बीच से भी मोती चुने जा सकते हैं। जरूरी है बच्चों के मानसिक बदलाव व संघर्ष के बीच कुछ हासिल करने की उत्कंठा। यह देश की उपलब्धियों में भी दिखाई देती है, लेकिन वहां दरवाजे अलग-अलग हैं। समाज के भीतर कितने ही समाज और देश के भीतर कितने ही देश आज भी विभाजित हैं। आज भी राष्ट्रीय स्तर की चयन परीक्षाओं तक पहुंचने के लिए उस सशक्त समाज की परवरिश जारी है, जो कल भी सामर्थ्य रखता था और आज भी आर्थिक क्षमता की मचान है। राष्ट्रीय अवसरों में देश के महत्त्वपूर्ण पद, उद्देश्य और संभावनाएं आज भी समाज के एक बड़े वर्ग को बौना बनाए हुए हैं। आज भी जातीय मतगणना के शोर शराबे में सियासी फलसफे लिखे जा रहे हैं, लेकिन जब भीख मांगती पिंकी का हाथ गुरु जामयांग ने पकड़ा, तो न उसकी जाति और न ही धर्म पूछा गया।

राय

शब्दों का सफर र: विजय गर्ग

जीवन बहुत सुंदर है और इसकी सुंदरता का आकलन हम धरती पर मिले केवल भौतिक वस्तुओं और सुख- सुविधा से नहीं कर सकते हैं। हमारे सुख का आधार भौतिक वस्तुओं के अलावा और भी बहुत-सी चीजें हैं। पेड़, पहाड़, आकाश, धरती, नदियां, झील, तारे - ये सब सुंदर हैं। इनकी सुंदरता हमारे मन में सुंदर भाव जगाती है। इसी तरह शब्द भी सुंदर होते हैं। किसी के मीठे शब्दों के माधुर्य और उसे सुनने या पढ़ने के बाद मिलने वाले सुख से ज्यादा कुछ भी सुंदर नहीं है। उसमें बहती मीठी रस - सरिता से ज्यादा किसी वस्तु में माधुर्य रस नहीं है। ऐसी सरिता जिस भी कान तक पहुंचती है, वहां प्रेम, लगाव की चाशनी घोल देती है। मन के भीतर तक आह्लादित कर देती है। रिश्तों को प्रेम के मीठे बंधन में बांध देती है। मीठे शब्द मनुष्य के मन पर चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं और बोलने वाले के प्रति एक विशेष अनुराग उत्पन्न करते हैं।

शब्द मीठे और कड़वे, दोनों होते हैं। मीठे शब्द मनुष्य को मनुष्य का हितैषी बनाते हैं, तो कड़वे शब्द मनुष्य को मनुष्य का शत्रु भी बना देते हैं। शब्दों के इतने प्रभाव हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि जब भी किसी से हम बातचीत करें तो हमारे शब्द मर्यादित और मीठे रहें, क्योंकि हमारे शब्द हमारे संस्कार, हमारे परिवेश, हमारे रहन-सहन आदि बहुत सारी चीजों को दर्शाते हैं। हम सब किसी की भाषा देखकर आसानी से यह अंदाजा लगा लेते हैं कि यह व्यक्ति किस परिवेश से आया है। इसके ज्ञान का स्तर क्या है, इसकी संगति कैसी है और इसके संस्कार कैसे हैं। हमारे शब्द किसी व्यक्ति पर क्या प्रभाव उत्पन्न करेंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे और किस प्रकार शब्दों का संयोजन करते हैं। और यह सब मनुष्य की बुद्धि और विवेक पर निर्भर करता है कि वह शब्द का संयोजन किस प्रकार करता शब्दों के प्रभाव इस बात पर भी निर्भर रहते हैं कि शब्दों का संयोजन करते समय हमारे खुद के मन में कौन-से भाव रहते हैं, कितना हमारे अंदर प्रेम, घृणा, वात्सल्य, छल, कपट या माधुर्य था। शब्द तो स्वयं में जड़ है लेकिन हम अपने भाव और शब्द संयोजन द्वारा ही उसमें चेतना भरते प्राण फूंकते हैं। इसके बाद उनकी यात्राएं आरंभ होती हैं। फिर हमारे शब्द हमसे होते हुए दूसरे, तीसरे, चौथे तक हमसे भी ज्यादा तीव्र गति से यात्रा करने की क्षमता रखते हैं। जिस-जिस व्यक्ति तक हमारे शब्द पहुंचते हैं, वह व्यक्ति हमारे शब्दों के आधार पर ही हमारे व्यक्तित्व का अपने मन एक छवि तैयार कर लेता है। यानी हमारे शब्द हमारे पूरे व्यक्तित्व के परिचायक बन जाते।

कोई भी शब्द जब एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक की यात्रा करता है, तो वह खाली हाथ नहीं जाता है। कुछ भाव और भावनाएं, संवेदना लेकर यात्रा करता है। अब वह कठोर है या मधुर है, श्रवणीय है या अश्रवणीय है, हम शब्दों के पीठ पर कौन-सी भावनाएं सवार करके भेज रहे हैं, यह सब हमारी मानसिक सुंदरता पर निर्भर करता है। प्रयास रहना चाहिए कि शब्दों के साथ सुंदर और मृदु भावनाएं ही यात्रा करें, क्योंकि कहा जाता है कि अस्त्रों के बल पर कुछ लोगों पर प्रभाव जमाया जा सकता है, लेकिन अपने मृदु शब्दों के बल पर पूरी दुनिया पर अपना प्रभाव जमाया जा सकता है।

इसलिए जब कहीं भी हम अपने शब्द भेज रहे हों, इस बात का विशेष खयाल रखना चाहिए कि शब्द जब अपने गंतव्य तक पहुंचें तो उन शब्दों को पाने वाले को वह शब्द अपरिचित और अवांछित न लगे, बल्कि पाने वाले के मन को प्रफुल्लित करे, प्रेम और उल्लास उत्पन्न करे। जब शब्द अपने गंतव्य पर पहुंचे तो वहां पर उसको यथोचित आदर और सत्कार मिले। शब्द को गंतव्य पर आदर सत्कार मिलना दरअसल, भेजने वाले की नीयत और उसकी मनोदशा पर निर्भर करता है, क्योंकि भेजते समय जैसी मन में भावना होगी, वैसे ही शब्द संयोजना होगी। फिर उसी तरह गंतव्य पर शब्दों को नियति प्राप्त होगी। क्या यह रुचिकर लगेगा कि कहीं की यात्रा करें और गंतव्य पर निरादर और अपमान का सामना करना पड़े? ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं चाहेगा कि उसको अपमान और अनादर का सामना करना पड़े।

मनोविज्ञान मानसिक स्वास्थ्य से परे विविध कैरियर अवसर प्रस्तुत करता है

विजय गर्ग

जब कोई मनोविज्ञान में करियर बनाने के बारे में बात करता है, तो यह आश्चर्यजनक है कि कितनी बार बातचीत मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर बनने के इर्द-गिर्द केंद्रित होती है। वास्तव में, दस में से आठ छात्र इस आकांक्षा को व्यक्त करते हैं। जब उनसे पूछा गया कि उन्हें मनोविज्ञान की ओर क्या आकर्षित करता है, तो उनकी प्रतिक्रियाएँ अक्सर कुछ केंद्रीय विषयों के इर्द-गिर्द घूमती हैं: खुद को समझने की इच्छा, संचार की आदत, और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे लोगों की मदद करने का जुनून। ए ये प्रेरणाएँ एक व्यापक विषय-मानसिक स्वास्थ्य की ओर इशारा करती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की भारी कमी की पहचान को देखते हुए, यह फोकस न केवल वैध है बल्कि महत्वपूर्ण भी है। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि मानसिक स्वास्थ्य के व्यापक विषय के भीतर, मनोविज्ञान व्यक्तियों की सहायता करने और विभिन्न क्षेत्रों में उनके समग्र कल्याण में सुधार लाने के उद्देश्य से कई कैरियर मार्ग प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, नैदानिक मनोविज्ञान मानसिक स्वास्थ्य विकारों के आकलन, निदान और उपचार पर ध्यान केंद्रित करता है। परामर्श और चिकित्सा व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करने वाले व्यक्तियों को सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जबकि संगठनात्मक व्यवहार के विशेषज्ञ कार्यस्थलों में कर्मचारियों की भलाई और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए काम करते हैं। मनोविज्ञान किस प्रकार परामर्श और चिकित्सा से परे अवसर प्रदान करता है। पारंपरिक भूमिकाओं से परे विस्तार मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी को संबोधित करना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह पहचानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि मनोविज्ञान पारंपरिक भूमिकाओं से परे विविध कैरियर पथ प्रदान करता है। ऐसे कई क्षेत्र हैं जो विभिन्न उद्योगों में फैले मुद्दों और चुनौतियों का समाधान करने के लिए मनोविज्ञान के सिद्धांतों को लागू करते हैं। उदाहरण के लिए, खेल मनोविज्ञान एथलीटों को प्रदर्शन बढ़ाने, प्रतिस्पर्धा के दबाव से निपटने में मदद करता है, और व्यक्तियों और टीमों के मानसिक लचीलेपन और समग्र प्रदर्शन में सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है। फोरेंसिक मनोविज्ञान कानूनी मुद्दों, आपराधिक जांच और अपराधी पुनर्वास पर मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करता है। मानसिक स्वास्थ्य में प्रमुख कैरियर मार्ग इसके अलावा, मनोविज्ञान विज्ञान की अन्य शाखाओं के साथ संपर्क करता है, जिससे खोज के नए रास्ते उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, न्यूरोसाइकोलॉजी मस्तिष्क और व्यवहार के बीच संबंधों का अध्ययन करती है, अस्पतालों, अनुसंधान सेटिंग्स, या निजी अभ्यास में मस्तिष्क की चोटों या न्यूरोलॉजिकल स्थितियों वाले व्यक्तियों की जांच करती है। मानवीय कारक और

एर्गोनॉमिक्स जांच करते हैं कि एयरोस्पेस, ऑटोमोटिव और उपभोक्ता उत्पादों जैसे उद्योगों में उपयोगिता, सुरक्षा और दक्षता में सुधार के लिए लोग मशीनों और प्रौद्योगिकी के साथ कैसे बातचीत करते हैं। मनोविज्ञान की अन्य शाखाएँ हैं जो न केवल कैरियर के अवसर प्रदान करती हैं बल्कि लोगों के जीवन को सीधे तौर पर गहराई से प्रभावित करने और किसी के व्यक्तिगत विकास में योगदान करने का अवसर प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल मनोविज्ञान न केवल शिक्षण और सीखने के अनुभवों को बढ़ाने पर बल्कि छात्रों की जरूरतों का आकलन करने और शैक्षिक सेटिंग्स में व्यवहारिक हस्तक्षेपों को लागू करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है। नैदानिक मनोविज्ञान और परामर्श से लेकर खेल मनोविज्ञान, फोरेंसिक मनोविज्ञान और उससे आगे तक, यह क्षेत्र विविध उद्योगों में सार्थक प्रभावों के अवसर प्रदान करता है। मनोविज्ञान जटिल चुनौतियों का समाधान करने और व्यक्तिगत विकास, संगठनात्मक प्रभावशीलता और वैज्ञानिक उन्नति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण बना हुआ है। छात्रों को इन विविध कैरियर पथों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने से क्षेत्र की अधिक व्यापक समझ पैदा हो सकती है और समग्र सुधार में योगदान मिल सकता है बड़े पैमाने पर व्यक्तियों और समाज का कल्याण। जैसे-जैसे मनोविज्ञान विकसित हो रहा है, इसके लचीले कैरियर मार्ग व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करते हैं, जो हमारी लगातार बदलती दुनिया में प्रभावशाली योगदान को बढ़ावा देते हैं।

खोने में में छिपा पाना

विजय गर्ग

बचपन में हम सब एक खेल खेलते थे। खेल का नाम था - खो-खो। इस खेल में हम सब एक पंक्ति में विपरीत दिशा में चेहरा करके उकड़ूं बैठ जाते थे। एक साथी पीछे से आकर हमें 'खो' कहता, हम दौड़ कर दूसरे साथी को छूने की कोशिश करते। जिसे हम छू देते, वह 'बाहर' हो जाता। यहां पर खो का आशय अपने स्थान से उठकर 'खो' कहने वाले को अपना स्थान देना। बात खो की हो रही है। इससे बनने वाले शब्दों में खोना और खो जाना भी है।

खोना, यानी हमारे पास जो कुछ है, उसमें से कुछ हिस्सा हमसे अलग होना, जिसे अब हम प्राप्त नहीं कर सकते। कई बार अपने प्रयास से यह भले ही हमें प्राप्त हो जाए, पर उसके खोने का दर्द हमें हमेशा सालता रहता है। वास्तव में किसी चीज को पाने के बाद हमें जितनी खुशी मिलती है, उसके मुकाबले अधिक दुख हमें उसके खोने से मिलता है। खोने का दुख बहुत बड़ा होता है। इंसान अपनी जिंदगी में बहुत कुछ खोता है। कभी माता-पिता, भाई - बहन, दोस्त, रिश्तेदार- ये सभी कहीं न कहीं दिल से जुड़े होते हैं। कभी कोई शरीर का कोई अंग ही खो देता है, जैसे हाथ-पांव, आंख। ये भी अपने खोने के साथ इंसान को दुख दे जाते हैं।

समय के साथ कुछ के खोने पर हमें अफसोस होता रहता है, पर यह सब आगे चलकर भुला दिए जाते हैं। यह भी सच है कि जब भी हम कुछ खोते हैं, तो दूसरी ओर हम पाते भी हैं। हम क्या पाते हैं, इसका हमें पता नहीं चलता, क्योंकि हम खोने के गम से जुदा नहीं हो पाते। दरअसल, खोने के बाद जो हमें प्राप्त होता है, उसका आनंद कुछ और ही होता है। एक सज्जन दुर्घटना में अपनी एक आंख की रोशनी खो बैठे। एक आंख की रोशनी जाने के बाद वे अवसाद में चले गए। कुछ समय बाद धीरे-धीरे वे सहज होने लगे। अपना दोपहिया वाहन भी चलाने लगे। उन्होंने महसूस किया कि उनका एक कान कुछ अधिक ही संवेदनशील हो गया है। पीछे से आने वाले वाहन की सरसराहट को वे आसानी से महसूस करने लगे। पहले एक तरफ से आने वाले वाहनों से अक्सर उनकी टक्कर हो जाती, पर धीरे-धीरे उन्हें अपने एक कान के अतिसंवेदनशील होने की जानकारी हुई, तो वे अब कुशलता से दोपहिया वाहन चलाने लगे हैं। ये है खोने के बाद पाने का सुख। इसीलिए कहा गया है कि अगर एक रास्ता बंद होता है, तो दूसरे कई दरवाजे खुल भी जाते हैं। हमें पूरे संयम के साथ दूसरे दरवाजों को देखना होगा। कौन-सा दरवाजा हमारे लिए उपयुक्त होगा, यह भी समझना होगा। तभी हम सफलता के द्वार को खोल पाएंगे।

खोना से मिलता-जुलता शब्द है 'खो

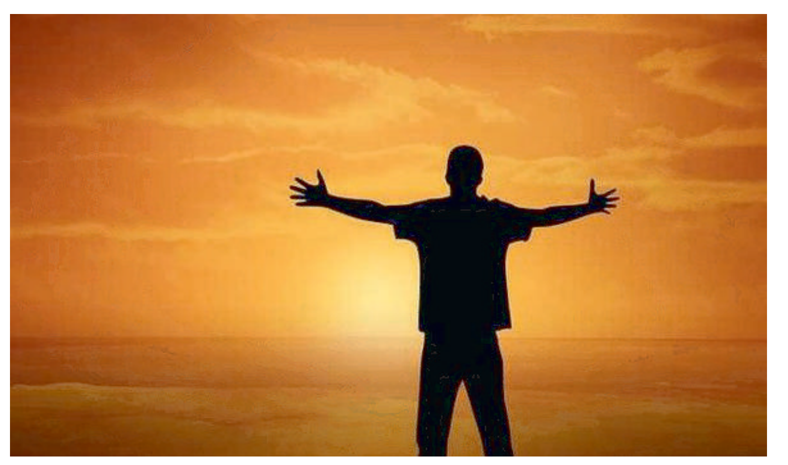

जाना', जो एक मानसिक स्थिति भी है। इंसान जब कुछ सोचते-सोचते गहराई में चला जाता है या कोई मनपसंद काम करते हुए उसमें डूब जाता है, तो यह स्थिति भी 'खो जाना' कहलाती है। मनपसंद काम में डूब जाने का अर्थ ही है, अपने काम में इतना तल्लीन हो जाना कि दिन-दुनिया का ध्यान ही न रहना। इसमें हमारे भीतर का जज्बा हमें बाहरी दुनिया से अलग कर देता है। यही है खो जाने की स्थिति। यह ध्यान की एक मानसिक स्थिति है, जो हर किसी को प्राप्त नहीं होती। इस दौरान जब हमें कोई यह कहता है कि कहां खो गए, तब हमें आभास होता है कि हम किसी और ही दुनिया में पहुंच गए थे।

इस तरह खोना एक अच्छी स्थिति है। खोने का आशय यह नहीं लेना चाहिए कि हमसे कुछ आखिरी तौर पर अलग ही हो गया। अगर अलग भी हुआ है, तो हमें कुछ देकर ही जाएगा। क्या देकर जाएगा, यह परिस्थितिजन्य है। परिस्थितियों के अनुसार हमें कुछ ऐसा प्राप्त हो सकता है, जिसके जरिए भी हम अपना जीवन संवार सकते हैं। हेलन केलर का उदाहरण है, जिन्होंने बहुत कुछ खोया, पर उससे भी अधिक पाया। जो कुछ पाया, वह अप्रतिम है। उसके खोने का लाभ हम सबको मिला। सूरदास ने आंखें खोईं, हमें कृष्ण पर उत्कृष्ट साहित्य मिला। अरुणिमा ने अपने पांव खोए, मगर हमें हिमालय पर चढ़ने का जज्बा मिला। अगर यह सब अपने भीतर कुछ अलग या खो जाने पर अवसाद में ठहरे रहते, तो दुनिया को कुछ भी न मिलता। ऐसा अक्सर अपने आसपास भी कभी देखा जा सकता है कि अगर कोई व्यक्ति अपने किसी दुख में डूबा रहता है, तो वह तब तक दुखी ही दिखता है, जब तक कि वह उस भाव से बाहर नहीं निकलता। जैसे ही किसी खोई गई चीज का गम भुला कर वैसा नया बनाने का हौसला काम करना शुरू कर देता है, वह पहले की तरह सक्रिय हो जाता है, उसे नया कुछ हासिल होना शुरू हो जाता है। इसलिए जब कुछ खो जाए, तो उसका गम करने की एक सीमा होनी चाहिए। खोने के बाद हमें जो कुछ भी नया मिल रहा है, उसका उपयोग करना सीखना चाहिए। बैसाखी पर चलने वालों के लिए वह एक सहारा ही नहीं, बल्कि एक हथियार भी है, जीवन को जी पाने का। हमें किसी के खोने का दुख होना चाहिए, लेकिन उस दुख में इतना अधिक नहीं डूब जाना चाहिए कि उसके बाद के जीवन के अवसरों को हम भुला दें। खोने से आगे कुछ नया पाने का रास्ता भी है। इस रास्ते को संभाल कर रखने की जरूरत है।

विदेशी निवेशकों ने तीन सत्रों में 27 हजार करोड़ के शेयर बेचे, इजरायल-ईरान संघर्ष और चीनी बाजारों के बेहतर प्रदर्शन का दिख रहा असर

परिवहन विशेष न्यूज

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) अक्टूबर के सिर्फ तीन कारोबारी सत्रों में ही भारतीय बाजारों से 27142 करोड़ रुपये के शेयरों की बिक्री कर चुके है। बीएसई में सूचीबद्ध शीर्ष-10 में से नौ कंपनियों के बाजार पूंजीकरण में 4.74 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है। इस सप्ताह केवल दो कंपनियों के आइपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे। इस आर्टिकल में विस्तार से जानें

नई दिल्ली। इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते संघर्ष के कारण कच्चे तेल की कीमतों में तेजी और चीन के बाजारों के बेहतर प्रदर्शन का भारतीय शेयर बाजारों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इन कारणों से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) अक्टूबर के सिर्फ तीन कारोबारी सत्रों में ही भारतीय बाजारों से 27,142 करोड़ रुपये के शेयरों की बिक्री कर चुके है।

इससे पहले सितंबर में एफपीआई ने 57,724 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे थे, जो 2024 में किसी एक महीने में सबसे ज्यादा एफपीआई निवेश था। नेशनल सिक्योरिटीज डिपाजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के डाटा के अनुसार, अप्रैल-मई के दौरान 34,252 करोड़ रुपये की निकासी के बाद जून से एफपीआई इक्विटी बाजारों में लगातार खरीदारी कर रहे थे।

इसके कारण 2024 में अब तक एफपीआई शुद्ध खरीदार बने हुए थे। सितंबर के अंत में एफपीआई का पूरे वर्ष में शुद्ध निवेश एक लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया था। लेकिन हालिया निकासी के बाद इक्विटी बाजारों में एफपीआई निवेश घटकर 73 हजार करोड़ रुपये के करीब रह गया है।

इक्विटी के अलावा, अक्टूबर के तीन कारोबार सत्रों में एफपीआई ने डेट या बांड बाजारों से 900 करोड़ रुपये की निकासी की है। हालांकि, डेट बाजारों में एफपीआई का कुल निवेश 2024 में अब तक एक लाख करोड़ रुपये के पार बना हुआ है।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार का कहना है कि एफपीआई की यह बिकवाली मुख्य रूप से चीनी बाजारों के बेहतर प्रदर्शन से प्रेरित है। पिछले एक महीने में हांगकांग का मुख्य सूचकांक हेंग सेंग 26 प्रतिशत बढ़ चुका है। चीनी शेयरों का मूल्यांकन काफी कम होने के कारण यह तेजी जारी रहने की संभावना है। इसके अलावा, आर्थिक प्रोत्साहन उपायों से भी चीन के बाजारों में तेजी बने रहने की उम्मीद है।

नौ कंपनियों का पूंजीकरण 4.74 लाख करोड़ रुपये घटा

बीते सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों में रही तेज गिरावट का कंपनियों के बाजार पूंजीकरण पर भी नकारात्मक असर पड़ा है। इस दौरान बीएसई में सूचीबद्ध शीर्ष-10 में से नौ कंपनियों के बाजार पूंजीकरण में 4.74 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के पूंजीकरण में सबसे ज्यादा 1.88 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है।

इस सप्ताह सब्सक्रिप्शन के लिए दो आइपीओ खुलेंगे

हाल के कुछ सप्ताहों में तेजी के बाद आइपीओ गतिविधियों में थोड़ी नरमी आई है। इस सप्ताह केवल दो कंपनियों के आइपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे। इसमें मेनबोर्ड का गरुड़ा कंस्ट्रक्शन एंड इंजीनियरिंग और एसएमई प्लेटफार्म का शिव टेक्सकेम का आइपीओ शामिल हैं। इस सप्ताह छह एसएमई कंपनियों के शेयर भी सूचीबद्ध होंगे।

बाजार में आई भारी गिरावट के बाद घट गया टॉप-9 कंपनियों का MCap, Reliance और HDFC Bank को हुआ ज्यादा नुकसान

30 सितंबर 2024 से 4 अक्टूबर 2024 के कारोबारी हफ्ते में केवल 4 दिन ही बाजार खुला था। 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर बाजार के दोनों स्टॉक एक्सचेंज बंद थे। वहीं बाकी 4 सत्रों में बाजार में गिरावट भरा कारोबार रहा। इस गिरावट वाले कारोबारी हफ्ते की वजह से निवेशकों को काफी नुकसान का सामना करना पड़ा। इसके अलावा टॉप-9 कंपनियों के एम-कैप में भी गिरावट आई।

नई दिल्ली। पिछले हफ्ते शेयर बाजार में भारी गिरावट आई। निवशकों को 16 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान का सामना करना पड़ा। बाजार में आई भारी गिरावट की वजह से स्टॉक मार्केट में एम-कैप (Mcap) भी घट गया। मार्केट कैप के लिहाज से टॉप-10 फर्मों में से न फर्म को संयुक्त 4,74,906.18 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। अगर टॉप लूजर की बात करें तो रिलायंस इंडस्ट्रीज (Reliance Industries) और एचडीएफसी बैंक (HDFC Bank) के एम-कैप में भारी गिरावट आई।

कितना कम हुआ टॉप कंपनियां का एम-कैप

रिलायंस इंडस्ट्रीज का मूल्यांकन 1,88,479.36 करोड़ रुपये घटकर 18,76,718.24 करोड़ रुपये रह गया।

एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्यांकन 72,919.58 करोड़ रुपये घटकर 12,64,267.35 करोड़ रुपये रह गया।

भारती एयरटेल का एम-कैप 53,800.31 करोड़ रुपये घटकर 9,34,104.32 करोड़ रुपये हो गया।

आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैपिटलाइजेशन 47,461.13 करोड़ रुपये घटकर 8,73,059.59 करोड़ रुपये रह गया।

भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) का मूल्यांकन 33,490.86 करोड़ रुपये घटकर 6,14,125.65 करोड़ रुपये हो गया।

हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार पूंजीकरण 27,525.46 करोड़ रुपये घटकर 6,69,363.31 करोड़ रुपये रह गया।

आईटीसी का एमकैप 24,139.66 करोड़ रुपये घटकर 6,29,695.06 करोड़ रुपये हो गया।

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) का बाजार पूंजीकरण 21,690.43 करोड़ रुपये घटकर 15,37,361.57 करोड़ रुपये रह गया।

भारतीय स्टेट बैंक का मूल्यांकन 5,399.39 करोड़ रुपये कम होकर 7,10,934.59 करोड़ रुपये हो गया।

हालांकि, इस हफ्ते इन्फोसिस के एम-कैप में तेजी देखने को मिली। इन्फोसिस का एम-कैप 4,629.64 करोड़ रुपये बढ़कर 7,96,527.08 करोड़ रुपये हो गया।

टॉप-10 फर्म

भारी गिरावट होने के बावजूद एम-कैप के आधार पर रिलायंस इंडस्ट्रीज टॉप पर है। इसके बाद टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, इंफोसिस, भारतीय स्टेट बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आईटीसी और एलआईसी आता है।

एक दूसरे से कितने अलग हैं RuPay, VISA और MasterCard, यहां समझें पूरी बात

डेबिट कार्ड और क्रेडिट कार्ड पर कार्ड का पेमेंट नेटवर्क भी लिखा होता है। भारत में तीन कार्ड नेटवर्क काफी पॉपुलर है। यह तीनों कार्ड एक दूसरे से काफी अलग है। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि यह तीनों कार्ड एक दूसरे से काफी अलग कैसे हैं और आपके लिए कौन-सा कार्ड बेहतर है।

नई दिल्ली। डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड को ध्यान से देखेंगे तो उस पर आपको RuPay, VISA और MasterCard लिखा होगा। सभी कार्ड पर अलग-अलग नाम छपे होते हैं। कई यूजर को लगता है कि यह नाम उनके किसी काम का नहीं है, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। सभी कार्ड यूजर को बता दें कि यह कार्ड नेटवर्क (Card Network) है और यह काफी जरूरी होता है।

हम आपको नीचे इन कार्ड के अंतर के बारे में बताएंगे। इसके साथ ही हम आपको यह भी बताएंगे कि यह आपके लिए किस प्रकार जरूरी है।

क्या होता है कार्ड नेटवर्क

बैंकिंग (Banking) कामों को आसान बनाने और जल्द से जल्द कैश विड्रॉल करने के लिए सही कार्ड नेटवर्क का होना जरूरी है। जिस प्रकार मोबाइल में कॉलिंग सही से हो इसके लिए हम सही मोबाइल नेटवर्क का चयन करते हैं उसी प्रकार ही कार्ड नेटवर्क भी काम करता है। Visa, Mastercard और Rupay भी कार्ड नेटवर्क या पेमेंट नेटवर्क कंपनियां है। यह कंपनियां यूजर्स को कैशलेस पेमेंट सिस्टम मुहैया कराता है।

भारत का पेमेंट नेटवर्क रुपे है। वहीं, वीजा और मास्टरकार्ड विदेशी कंपनियां है। यह सभी कंपनियां अपने यूजर्स को अलग अलग सुविधाएं देती है। दुनिया में वीजा सबसे बड़ा पेमेंट नेटवर्क है। इसके बाद मास्टरकार्ड का नंबर आता है। आइए, इन तीनों पेमेंट कार्ड नेटवर्क के बारे में समझते हैं।

Visa Card

अक्सर आपने डेबिट कार्ड पर वीजा लिखा हुआ देखा होगा। वीजा दुनिया का सबसे बड़ा पेमेंट नेटवर्क कंपनी है। इसे हर देश में एक्सपेप्ट किया है। वीजा के कई कार्ड मौजूद है जिसमें से Classic Card बेसिक कार्ड है। इस कार्ड को एक समय के साथ रिप्लेस किया जाता है और इसके जरिये इमरजेंसी में कैश विड्रॉल भी किया जा सकता है। वहीं वीजा का Gold और Platinum Card में Classic Card में मिल रही सुविधा के अलावा कई और सुविधा भी मिलती है। इन कार्ड पर ट्रेवल असिस्टेंस, ग्लोबल कस्टमर असिस्टेंस और ग्लोबल एटीएम नेटवर्क की सर्विस मिलती है।

MasterCard

मास्टरकार्ड के भी कई कार्ड होते हैं। इनमें से Standard Debit Card, Enhanced Debit Card और World Debit MasterCard काफी लोकप्रिय है। यह कार्ड बैंक अकाउंट ओपन करवाने पर स्टैंडर्ड डेबिट कार्ड मिलता है। बता दें कि मास्टरकार्ड खुद से कोई कार्ड जारी नहीं करता है। इसका दुनिया के कई कंपनियों के साथ पार्टनरशिप है। मास्टरकार्ड में भी यूजर को वीजा कार्ड की तरह कई सुविधाएं मिलती हैं।

RuPay Card

रुपे कार्ड इंडिया का पेमेंट नेटवर्क है। इस कार्ड को नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) ने लॉन्च किया है। रुपे में भी कई कार्ड जैसे - Classic, Platinum और Select Card जारी होता है। यह कार्ड केवल भारत में ही एक्सेप्ट होता है।

अमेरिका के बाद अब यूरोपीय देश भी चखेंगे 'टेस्ट ऑफ इंडिया', तैयार है अमूल का मास्टरप्लान

परिवहन विशेष न्यूज

अमूल ने अपने बिजनेस को बढ़ाने के लिए अमेरिका में भी अपने प्रोडक्ट बेचने शुरू किये थे। अब अमूल यूरोप में अपने प्रोडक्ट बेचने के लिए तैयार हो गया है। हाल ही में अमूल ने अमेरिका में अपने प्रोडक्ट को लॉन्च किया था। अब जेयन मेहता ने बताया कि अमेरिका में सफलता हासिल करने के बाद कंपनी पहली यूरोपियन मार्केट में कदम रखने के लिए तैयार है।

नई दिल्ली। अमूल की लड़की को आप जानते ही होंगे। कुछ महीने पहले अमूल ने अपने बिजनेस को बढ़ाने के लिए अमेरिका में भी अपने प्रोडक्ट बेचने शुरू किये थे। अब अमूल यूरोप में अपने प्रोडक्ट बेचने के लिए तैयार हो गया है। अमूल के मैनेंजिंग डायरेक्टर और गुजरात के को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड (GCMMF) जेयन मेहता (Jayen Mehta) ने कहा की यूएस में अमूल की सपलता के बाद अब यूरोपियन बाजार में भी अमूल के प्रोडक्ट पहुंचेंगे। यूरोपियन मार्केट में इन प्रोडेक्ट के पहुंच जाने के बाद अमूल अपने नाम एक और सफलता हासिल करेगा।

जेयन मेहता ने आज प्राइवेट बिजनेस मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि दुनिया में सबसे ज्यादा दूध का उत्पादन भारत करता है। आन वाले कुछ सालों में भारत दुनिया के एक-तिहाई मिल्क प्रोडक्शन करने के लिए तैयार हो जाएगा। उन्होंनें कहा कि डेयरी केवल बिजनेस ही नहीं है वह ग्रामीण क्षेत्रों की लाइफ लाइन भी है।

यूरोपियन मार्केट में रखेगा कदम

हाल ही में अमूल ने अमेरिका में अपने प्रोडक्ट को लॉन्च किया था। अब जेयन मेहता ने बताया कि अमेरिका में सफलता हासिल करने के बाद कंपनी पहली यूरोपियन मार्केट में कदम रखने के लिए तैयार है।

अमूल प्रोटीन-रिच, ऑर्गेनिक और कैमिकल-फ्री प्रोडक्ट बेचता है। वह अपने कस्टमर के विश्वास को बनाए रखता है। कंपनी अपने इकोसिस्टम को डेवल्प करने के लिए कैपेसिटी के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर को एक्सपेंड कर रहा है।

अमूल के फाउंडर Dr Kurien

80,000 करोड़ रुपये का टर्नओवर

अमूल रोजाना 310 लाख लीटर दूध कलेक्ट करता है। पूरे देश में अमूल के 107 डेयरी प्लांट है। जेयन मेहता ने बताया कि सालाना लगभग 22 बिलियन मिल्क के पैक बेचता है। वहीं, कंपनी का टर्नओवर 80,000 करोड़ रुपये है। भारत के डेयरी और फूड बिजनेस सेक्टर में अमूल काफी फेमस ब्रांड है। अमूल में 36 लाख से ज्यादा किसान काम कर रहे हैं।

आरबीअइ एमपीसी के फैसले के साथ कई फैक्टर्स रहेंगे अहम, निवेशक जानें कैसी रहेगी बाजार की चाल

परिवहन विशेष न्यूज

पिछले हफ्ते के गिरावट भरे कारोबार को देखने के बाद अब निवेशकों की नजर कल से शुरू होने वाले कारोबारी हफ्ते पर है। इस हफ्ते कंपनियों के दूसरी तिमाही नतीजों के साथ आरबीआई एमपीसी बैठक के फैसला बाजार के मुख्य फैक्टर्स रहेंगे। बता दें कि शुक्रवार को सेंसेक्स और निफ्टी करीब 1 फीसदी गिरकर बंद हुए थे।

नई दिल्ली। शेयर बाजार के पिछले हफ्ते के कारोबार देखते हुए निवेशक आगामी हफ्ते के कारोबार को लेकर काफी चिंतित हैं। पिछले हफ्ते शेयर बाजार में भारी गिरवट देखने को मिली थी। यह गिरावट इजरायल-ईरान युद्ध (Israel-Iran War) की वजह से आई है। 18 सितंबर 2024 को फेड रिजर्व बैठक के फैसले के बाद शेयर बाजार अपने उच्चतम स्तर को टच कर लिया था। लेकिन, वैश्विक भू-राजनीतिक हलचल ने बाजार के कारोबार को पूरी तरह से प्रभावित कर दिया।

हम आपको नीचे बताएंगे कि इस हफ्ते बाजार की चाल के लिए कौन-से फैक्टर्स अहम रहने वाले हैं।

ये फैक्टर्स रहेंगे अहम

7 अक्टूबर से भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) बैठक की द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा बैठक होगी। इस बैठक में रेपो रेट (Repo Rate) को लेकर फैसला लिया जाएगा। पिछले 8 बैठक से रेपो रेट को स्थिर रखने का फैसला लिया गया है। इस बार उम्मीद की जा रही है कि इस बार आरबीआई रेपो रेट में बदलाव कर सकता है। आरबीआई के फैसले का असर भारतीय शेयर बाजार के कारोबार पर पड़ेगा।

आईटी कंपनियों के साथ कई बड़ी कंपनियां दूसरी तिमाही के नतीजों का एलान करने वाली है। कंपनी इस एलान में अपने फाइनेंशियल परफॉर्मेंस के बारे में बताएंगी। निवेशकों की नजर कंपनियों के परफॉर्मेंस पर रहेगी। तिमाही नतीजों के साथ ही ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमतों में उतार-चढ़ाव का भी असर शेयर बाजार के कारोबार पर रहेगा।

मध्य-पूर्व देशों में हो रहे घटनाओं ने भी ग्लोबल मार्केट पर असर डाला है। भू-राजनीतिक उथल-पुथल के कारण विदेशी निवेशकों ने निकासी करना शुरू कर दिया। इस आउटफ्लो ने बाजार के ट्रेडिंग पर भी असर डाला है। मध्य-पूर्व देशों में हो रहे घटनाओं की वजह से भी पिछले हफ्ते बाजार में भारी गिरावट आई।

आरबीआई के एमपीसी बैठक के फैसले का असर शेयर बाजार पर पड़ेगा। इसके अलावा टीसीएस की दूसरी तिमाही के नतीजों का असर शेयर बाजार पर पड़ेगा। इसके अलावा कमोडिटी की कीमतें, अमेरिकी डॉलर सूचकांक और प्रमुख अमेरिकी आर्थिक डेटा भी बाजार के कारोबार पर असर डालेगा।

स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक प्रवेश गौड़

कैसा था पिछले हफ्ते बाजार

4 अक्टूबर 2024 को सेंसेक्स 808.65 अंक या 0.98 फीसदी की गिरावट के साथ 81,688.45 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी भी 235.50 अंक या 0.93 फीसदी लुढ़ककर 25,014.60 अंक पर बंद हुआ।

आरबीआई की एमपीसी की बैठक आज से, रेपो रेट में कटौती की उम्मीद नहीं

आरबीआई की एमपीसी बैठक (RBI Mpc Meet) 7 अक्टूबर 2024 से 9 अक्टूबर 2024 तक होगी। इस बैठक में रेपो रेट को लेकर फैसला लिया जाएगा। इस बार भी रेपो रेट में कोई कटौती की उम्मीद नहीं है। इसकी बड़ी वजह यह है कि खुदरा मुद्रास्फीति अभी भी चिंता का विषय है और पश्चिम एशिया में हालात और बिगड़ने की संभावना है।

नई दिल्ली। आरबीआई की सोमवार से शुरू होने वाली मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक में रेपो रेट को लेकर किसी तरह की कटौती की उम्मीद नहीं है। इसकी बड़ी वजह यह है कि खुदरा मुद्रास्फीति अभी भी चिंता का विषय है और पश्चिम एशिया में हालात और बिगड़ने की संभावना है।

इसका असर कच्चे तेल और कमोडिटी की कीमतों पर पड़ सकता है। इस महीने की शुरुआत में सरकार ने आरबीआई की एमपीसी का पुनर्गठन किया था। सरकार ने रामसिंह, सौगत भट्टाचार्य और नागेश कुमार को एमपीसी के बाहरी सदस्यों के तौर पर नियुक्त किया है। इन्होंने आशिमा गोयल, शशांक भिड़े और जयंत आर वर्मा का स्थान लिया है।

आरबीआई के गवर्नर के अलावा अन्य आंतरिक सदस्यों में मौद्रिक नीति प्रभारी और डिप्टी गवर्नर माइकल देबब्रत पात्रा और आरबीआई के मौद्रिक नीति विभाग के कार्यकारी निदेशक राजीव रंजन हैं। एमपीसी के चेयरमैन आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास बुधवार को तीन दिवसीय चर्चा के नतीजे की घोषणा करेंगे।

आरबीआई ने फरवरी, 2023 से रेपो रेट को 6.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा है और विशेषज्ञों का मानना है कि दिसंबर में ही इसमें कुछ ढील देना संभव होगा। सरकार ने केंद्रीय बैंक को यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित खुदरा मुद्रास्फीति दो प्रतिशत घट-बढ़ के साथ चार प्रतिशत पर बनी रहे। मौजूदा समय में विशेषज्ञों का मानना है कि आरबीआई फेडरल रिजर्व के कदमों का अनुसरण नहीं कर सकता है, जिसने नीतिगत दरों में 50 आधार अंकों की कमी की है और कुछ विकसित देशों के केंद्रीय बैंक ने इस दिशा में कदम उठाया है।

और गहरा सकता है ईरान-इजरायल विवाद

बैंक आफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस ने कहा कि हमें एमपीसी द्वारा रेपो दर में किसी बदलाव की उम्मीद नहीं है। इसका बड़ा कारण यह है कि सितंबर और अक्टूबर में मुद्रास्फीति के पांच प्रतिशत से अधिक रहने का अनुमान है। वर्तमान कम मुद्रास्फीति आधार प्रभाव के कारण है। इसके अलावा ईरान-इजरायल विवाद और भी गहरा सकता है। उन्होंने कहा कि नए सदस्यों के साथ एमपीसी के लिए यथास्थिति सबसे अच्छा विकल्प होगा। मुद्रास्फीति पूर्वानुमान 10-20 आधार अंक तक कम हो सकता है, लेकिन जीडीपी पूर्वानुमान में किसी तरह के बदलाव की उम्मीद नहीं है।

मुद्रास्फीति पर असर डाल सकती है भू-राजनीतिक अनिश्चितता

रेटिंग एजेंसी इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा कि पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि में कमी को देखते हुए इस बात की संभावना ज्यादा है कि एमपीसी रेपो रेट को लेकर तटस्थ रुख अपनाए। दिसंबर, 2024 में होने वाली एमपीसी की बैठक में रेपो रेट में कुछ कमी की जा सकती है और फरवरी, 2025 में होने वाली बैठक में 25 आधार अंक की कटौती का एलान हो सकता है। अच्छे मानसून के चलते खाद्य पदार्थों की मुद्रास्फीति के नियंत्रण में रहने की उम्मीद है। हालांकि वैश्विक राजनीतिक घटनाक्रम और भू-राजनीतिक अनिश्चितता मुद्रास्फीति पर असर डाल सकती है।

फेडरल रिजर्व के कदमों का अनुसरण नहीं करेगा आरबीआई

सिग्नेचर ग्लोबल (इंडिया) लिमिटेड के संस्थापक प्रदीप अग्रवाल ने कहा कि यह बात ठीक है कि रियल एस्टेट उद्योग और घर खरीदने वाले आगामी मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में ब्याज दर में कटौती की उम्मीद कर रहे हैं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि आरबीआई रेपो रेट को लेकर तटस्थ रुख अपनाएगा।

उन्होंने कहा कि सर्वोच्च बैंक अभी भी समग्र खुदरा मुद्रास्फीति परि2श्य (विशेष रूप से खाद्य मुद्रास्फीति) से असहज है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा हाल ही में ब्याज दर में कटौती ने भारत में भी इसी तरह की उम्मीदें जगाई हैं, लेकिन घरेलू परिदृश्य बहुत अलग है।

पर्यावरण पाठशाला से जीवन की सीखें : बीज मंत्र : अंकुर

पर्यावरण पाठशाला के अंतर्गत आज हम एक अनोखी बातचीत करने जा रहे हैं, जो है बीज और अंकुर के बीच। यह बातचीत न केवल प्रकृति से सीखने का अवसर देती है, बल्कि जीवन के गहरे और महत्वपूर्ण सबक भी सिखाती है। आइए जानते हैं कि एक छोटा सा बीज और उससे उत्पन्न होने वाला अंकुर हमें जीवन के किन-किन पहलुओं पर ध्यान देने की प्रेरणा देता है।

बीज:
"मेरा अस्तित्व केवल मिट्टी में छिपे रहने तक सीमित नहीं है। मैं प्रतीक्षा करता हूँ, एक सही समय का, सही अवसर का, जब मुझे धरती से बाहर आने का मौका मिलेगा। मेरा धैर्य मुझे सिखाता है कि हर कार्य का एक सही समय होता है। धैर्य और शांतता से, मैं खुद को तैयार करता हूँ जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए।"

अंकुर:
"तुम्हारा धैर्य वाकई अद्भुत है। जब तुम मिट्टी में होते हो, कोई तुम्हें देख नहीं पाता, लेकिन तुम जानते हो कि एक दिन तुम्हें अपने आप को साबित करने का मौका मिलेगा। मैं जब तुमसे उत्पन्न होता हूँ, तब मेरा संघर्ष शुरू होता है। मुझे सूर्य की ओर बढ़ना होता है, लेकिन वह सफर आसान नहीं होता। फिर भी, मैं आशा करता हूँ और निरंतर बढ़ता हूँ। यह मुझे सिखाता है कि जीवन में चुनौतियाँ हमेशा आएंगी, लेकिन हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए।"

बीज:
"तुम्हारे इस संघर्ष में तुम्हारी जड़ें तुम्हें ताकत देती हैं, उन्हें गहराई में फैलाते जाना तुम्हारे विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है। यही जीवन का नियम है – जितनी गहरी जड़ें होंगी, उतना ही मजबूत और स्थिर हम खड़े रह पाएंगे। बाहरी दुनिया में हमारी पहचान तब तक नहीं बन सकती जब तक हमारी जड़ें मजबूत न हों।"

अंकुर:
"सही कहा ! जड़ें केवल हमें पोषण नहीं देतीं, बल्कि हमें सिखाती हैं कि सफलता का आधार हमारे आंतरिक गुण होते हैं, जिन्हें लगातार विकसित करना होता है। जिस तरह से मैं हर दिन थोड़ा और ऊपर बढ़ता हूँ, यह मुझे सिखाता है कि छोटी-छोटी प्रगति ही बड़ी सफलताओं की ओर ले जाती है। कभी-कभी हम सोचते हैं कि प्रगति नहीं हो रही, लेकिन वास्तव में हम प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा मजबूत होते जाते हैं।"

बीज:
"मेरा जीवन एक प्रतीक है नई शुरुआत का, पुनर्जन्म का। चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएं, एक बीज के अंदर हमेशा वह क्षमता होती है कि वह एक विशाल पेड़ में परिवर्तित हो सकता है। यही हमें सिखाता है कि जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए, क्योंकि हर चुनौती के बाद एक नई शुरुआत हो सकती है।"

अंकुर:
"तुम्हारे भीतर छिपी शक्ति अद्वितीय है। और जब मैं तुमसे उत्पन्न होकर एक वृक्ष बनता हूँ, तो मैं दुनिया को यह सिखाता हूँ कि हम सभी के भीतर असीम संभावनाएँ हैं। हमें बस अपने समय पर विश्वास करना है और निरंतर प्रयास करते रहना है। वृक्ष बनकर मैं छाया, फल, और जीवन प्रदान करता हूँ, और यही हमारा अंतिम उद्देश्य होना चाहिए – दूसरों के जीवन में सकारात्मक योगदान देना।"

बीज:
"बिलकुल, प्रकृति की यह शिक्षा जीवन के हर पहलू पर लागू होती है। धैर्य, संघर्ष, प्रगति, और सेवा – ये सभी एक बीज और अंकुर से सीखे जा सकते हैं। हर छोटी चीज, चाहे वह कितनी भी मामूली लगे, उसका अपना महत्व होता है।"

अंकुर:
"तो आइए, हम सभी प्रकृति से सीखें। बीज की तरह धैर्य रखें, और अंकुर की तरह निरंतर आगे बढ़ें। यही जीवन का सबसे बड़ा सबक है – खुद को पहचानना, अपनी जड़ों को मजबूत करना, और दुनिया को कुछ नया देना।"

पर्यावरण पाठशाला हमें यही सिखाती है – प्रकृति से सीखें और उसे अपने जीवन में लागू करें। बीज और अंकुर की इस बातचीत से हम सभी को जीवन के इन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

indiangreenbuddy@gmail.com

केंद्र कोयला बकाया दे दे तो हम तीन-तीन लाख रू महिलाओं में बांट देगें : हेमंत सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा

जमशेदपुर , केंद्र सरकार झारखंड की कोयला का हमारा बकाया रूपया हमें देदे तो हर महिलाओं को खाते में हम तीन तीन लाख बांट देगें यह कहना है मुख्यमंत्री झारखंड हेमंत सोरेन का । झारखंड की आसन्न विधानसभा चुनाव को लेकर नेताओं का नित्य नये प्रयोग एवं एक एक दुशरे की उठा पटक आलोचना देखेने को मिल रहे हैं ।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की कोयला कंपनियों के पास झारखंड के 1 लाख 36 हजार करोड़ रुपए बकाया हैं। अगर यह पैसा केंद्र सरकार झारखंड को उपलब्ध करा दे तो राज्य सरकार इस स्थिति में होगी कि हर महिला के बैंक खाते में तीन-तीन लाख रुपए भेज सके। इतना ही नहीं ओडिशा के मुख्यमंत्री के झारखंड दौरे के बाद उन्होंने ओडिशा सरकार की जन कल्याणकारी योजना में महिलाओं को दी जा रही धनराशि संबंध में आलोचना करने नहीं छोड़ा ।

मुख्यमंत्री जमशेदपुर में महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (एमजीएम) में 500 बेड की नई बिल्डिंग और ओपीडी कॉम्प्लेक्स के उद्घाटन के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। हेमंत सोरेन ने कहा कि हमने महिलाओं को सम्मान देने के लिए 'मंईयां सम्मान योजना' लागू की तो भाजपा के लोगों ने इस योजना को बंद करने के लिए कोर्ट में आवेदन डाला है ।

हेमंत सरेन ने कहां की यह बड़ी विचित्र बात कहा जा रहा है कि महिलाओं के खाते में अब 21 सौ रुपए दिए जाएंगे जैसा कि भाजपा घोषणा कर रही है उन्होंने ओडिशा सरकार से इस संबंध में पुछने को कहा । यह भ्रामक प्रचार कर झूठे फॉर्म भरवाये जा रहे हैं बड़ी राशि के लिए ।गत चुनाव के पहले भी यह कहा गया था कि आपके खाते में हम 15 15 लख रुपए भेज देंगे क्या आपको यह अब तक मिला है ??

माँ चामुंडा देवी के 32वे भव्य मेले में सभी शहरवासी परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं : पोला भाई ग्रुप

मां चामुंडा देवी का आशीर्वाद और प्रसाद लेने और अपने छोटे भाई को आशीर्वाद देने जरूर आए : संजय वर्मा (पोला भाई)

चलों - चलों, माँ चामुंडा के दरवार चलों : राजा शर्मा

आगरा,संजय साग़र सिंह। हर साल की भांति इस साल भी नवरात्रि के शुभ अवसर पर दैनिक यात्री व व्यापारी संघ पोलाभाई ग्रुप द्वारा मां चामुंडा देवी का 32वा विशाल मेला, मां चामुंडा देवी मंदिर राजा मंडी रेलवे स्टेशन पर 3 अक्टूबर से आरम्भ हो गया हैं, जो मां चामुंडा के आशीर्वाद से 13 अक्टूबर चलेगा। इस विशाल-भव्य मेले में सभी शहरवासी परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

इस शुभ अवसर पर दैनिक यात्री एवं व्यापारी संघ के अध्यक्ष संजय वर्मा उर्फ़ पोला भाई ने सभी देशवासियों को नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम अध्यक्ष पोला भाई ने कहा, सभी को सूचित करते हुए बहुत ही हर्ष हो रहा है कि माँ चामुण्डा देवी की असीम अनुकम्पा से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 3 अक्टूबर से 13 अक्टूबर तक 32वाँ माँ चामुण्डा देवी के विशाल मेले का राजामण्डी रेलवे स्टेशन, दिल्ली गेट, आगरा पर आयोजन किया जा रहा है। इस भव्य - विशाल मेले में 14 फुट की माँ दुर्गा जी की मूर्ति भक्तों के दर्शन हेतु स्थापित की गयी हैं, जिसे कलकत्ता एवं नासिक के कारीगरों द्वारा पूजन सामग्री एवं मिट्टी के द्वारा पर्यावरण के अनुकूल बनाया गया है। इस भव्य मेले में सभी शहरवासी परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं। अतः आप अपना कीमती समय निकालकर मां चामुंडा देवी का आशीर्वाद और प्रसाद लेने और अपने छोटे भाई को आशीर्वाद देने जरूर आए। उन्होंने कहा, हर साल की भांति इस साल भी मातारानी का आशीर्वाद प्राप्त करने मेले में हजारों श्रद्धालु आ रहे हैं और आरती के बाद आशीर्वाद और प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं। हमारी प्रार्थना हैं कि मां चामुंडा देवी सभी श्रद्धालुओं की मनोकामना पूरी करें। सभी देशवासियों पर माता रानी की कृपा हमेशा बनी रहे। इस पुण्य कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेने वाले सभी सराहनीय सहयोगियों का बहुत - बहुत आभार। जय बाबा की। जय माता दी।

इसीक्रम में कार्यक्रम उपाध्यक्ष आशु जैन से बताया कि मेले में 225 फुट लम्बी माता गर्भजून की गुफा बनाई गई है और माँ वैष्णों देवी भवन, भैंरोघाटी, भैंरो भवन एवं अमरनाथ जी की बर्फानी गुफा व हाथी मत्था की खड़ी चढ़ाई 340 फुट लम्बी बनाई गई है। पं. देवस्वरूप शास्त्री जी, पं. कृष्णा मिश्रा व आचार्य सचिन दीक्षित ने बताया कि भव्य आरती प्रतिदिन प्रातः 6 बजे, प्रातः 8:30 बजे, रात्रि 9 व 11:45 बजे की जायेगी तथा कार्यक्रम में महिलाओं के लिये सायं 7 से रात्रि 10 बजे तक विशेष डांडिया एवं गरबा का निशुल्क आयोजन भी रखा गया है।

मीडिया प्रभारी राजा शर्मा ने बताया कि आयोजन का मुख्य उद्देश्य वे भक्तजन हैं जो मातारानी के दर्शन हेतु किसी भी कारणवश माँ वैष्णो देवी भवन, जम्मू नहीं जा सकते हैं, उन्हें माँ वैष्णो देवी भवन, जम्मू के साक्षात दर्शन का अनुभव आगरा में ही करायें जाएं।

वहीं, इस सराहनीय एवं पुण्य कार्य में आशू जैन, पोला भाई, प्रदीप अग्रवाल, हेमन्त प्रजापति, संतोष अग्रवाल,शरद चैहान, विक्रान्त सिंह, मुरारी लाल गोयल, राजेश प्रजापति, अमित पटेल, कुंदनिका शर्मा, पंकज अग्रवाल, मनोज राजौरा, अरविन्द उपाध्याय, राजा शर्मा, पप्पू शर्मा, सुभाष गुप्ता, राममोहन शर्मा, मंजीत सिंह, निक्कू पंडित, महेश निषाद, गिर्राज बंसल, पवन बंसल, मुकेश शर्मा, अरूण शुक्ला, गोलू गुप्ता, अनिल चैहान, बबलू भाई, प्रदीप बनवारी, रवि शर्मा, पवन अग्रवाल, संजीव पाठक, यश पीटरसन, राज ठाकुर, रोहित गर्ग, बी.पी.चैहान, शोभित अग्रवाल, विक्की गर्ग, अरिहंत जैन,रोहित शर्मा, अरविंद गुप्ता, बसंत शर्मा, दीपू यादव, लालू भाई, अभिषेक मंशानी, अन्नू भाई, यश चैहान, आशू शर्मा, सुनील केसवानी, शिवम शर्मा, यतिन चैपड़ा, हनी पंडित, सजल गर्ग, नौशाद जाफरी, अमित गुप्ता, संजय सिंह, हरिशंकर उपाध्याय, राहुल गौतम, हैदर भाई, यश उपाध्याय, अभिषेक, सौरभ, देव सिंह देवू, उमेश, नन्दू, टिल्लू आदि कमेटी के सदस्यगण प्रमुख रूप से बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं।

हैदराबाद। निजामपेट स्थिति काग परिवार व सेपटा परिवार द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में सम्मान समारोह में उपस्थित आयोजक मांगीलाल काग, नेमाराम सेपटा सीरवी समाज पारसीगुटा बडेर सदस्य चेनाराम परिहार,बाबूलाल मुलेवा , नेमाराम ढगलाराम सपेटा , नारायण लाल परिहार, तेजाराम, बगदाराम, जगदीश काग ,गीरधारीलाल चोयल, ओमप्रकाश ,जगदीश सीरवी नारायण लाल व अन्य।

'यह लोकतंत्र के अनुरूप नहीं', जगदीप धनखड़ ने न्यायपालिका के कार्यकारी शक्तियों के प्रयोग पर क्यों जताई चिंता?

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने रविवार को कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल कर्ण सिंह के सार्वजनिक जीवन में 75 वर्ष पूरे होने पर आयोजित सम्मान समारोह में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि न्यायपालिका द्वारा कार्यकारी शासन उसके संवैधानिक अधिकार क्षेत्र से परे है और यह लोकतंत्र के अनुरूप नहीं है।

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने रविवार को शक्तियों के पृथक्करण के मुद्दे पर चर्चा की और कहा कि न्यायपालिका द्वारा कार्यकारी शासन उसके संवैधानिक अधिकार क्षेत्र से परे है और यह लोकतंत्र के अनुरूप नहीं है।

उन्होंने बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों से राष्ट्रीय चर्चा को गति देने का आग्रह किया, ताकि कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका द्वारा संवैधानिक भावना का सम्मान सुनिश्चित किया जा सके।

'भारत के भीतर और बाहर शत्रुतापूर्ण ताकतों का जमावड़ा'

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल कर्ण सिंह के सार्वजनिक जीवन में 75 वर्ष पूरे होने पर आयोजित सम्मान समारोह में धनखड़ ने कहा कि भारत के भीतर और बाहर दोनों जगह शत्रुतापूर्ण ताकतों का जमावड़ा और राष्ट्र-विरोधी बयान गहरी चिंता का विषय हैं। इन घातक ताकतों को बेअसर करने के लिए राष्ट्रीय भावना को प्रभावित करने वाले ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

शक्तियों के पृथक्करण का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कार्यकारी शासन कार्यपालिका के लिए विशिष्ट है, जैसे विधेयक विधायिकाओं के लिए और फैसले अदालतों के लिए। न्यायपालिका या विधायिका द्वारा कार्यकारी अधिकारों का प्रयोग लोकतंत्र और संवैधानिक प्रविधानों के अनुरूप नहीं है। धनखड़ ने कहा कि न्यायपालिका द्वारा कार्यकारी शासन विधि शास्त्र और न्यायिक दृष्टि से संविधान से परे है।

निजी मालिकों के संगठन द्वारा लक्ष्मी' बस का विरोध: कल से बंद होंगी बसें

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेस्वर् : लक्ष्मी बस सेवा का निजी बस मालिक संघ ने विरोध किया है। दक्षिण और पश्चिम ओडिशा में 7 तारीख यानी कल शाम से 24 घंटे के लिए निजी बस सेवा बंद करने का फैसला लिया गया है। निजी बस मालिक संघ शुरू से ही लक्ष्मी बस सेवा का विरोध कर रहा है। अब लक्ष्मी बस टाइप-2 सेवा उपलब्ध कराने की अधिसूचना प्रकाशित होने के बाद प्राइवेट बस ओनर्स एसोसिएशन ने इसका कड़ा विरोध किया है ।जयपुर प्राइवेट बस ओनर्स एसोसिएशन की ओर से प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई. जयपुर प्राइवेट बस ओनर्स एसोसिएशन के संपादक नरेंद्र मोहंती ने बताया कि बसों के संचालन के विरोध में अगले सोमवार शाम 6 बजे से शाम 6 बजे तक लक्ष्मी बसें बंद रहेंगी।

पिछले दिनों लक्ष्मी बस सेवा शुरू होने के बाद घाटा होने से निजी बस मालिकों में हड़कंप मच गया। बाद में, तत्कालीन बिजेड़ी सरकार ने राज्य संघ के साथ बातचीत की।

टाइप-1 लक्ष्मी बस चलाने के लिए सहमत हो जाती है। उस समय विपक्ष में बैठी मौजूदा भाजपा सरकार ने राज्य निजी बस मालिक संघ का समर्थन किया था। अब सत्ता में आने के बाद बीजेपी टाइप-2 लक्ष्मी बस सेवा शुरू करने जा रही है। इसका संघ विरोध करता है ।बताया गया कि लक्ष्मी बस टाइप-1 पंचायत से ब्लॉक तक, टाइप-2 बस ब्लॉक से जिला सदर महकुमा तक चलेगी। यूनियन के विरोध के कारण सरकार ने टाइप-2 में सेवा बंद कर दी. अब एक संस्था ने टाइप-2 में लक्ष्मी बसें चलाने के लिए आवेदन कर दिया है। श्री मोहंती ने कहा कि इसके विरोध में दक्षिण एवं पश्चिम ओडिशा के निजी बस मालिक संघ द्वारा बंद का आह्वान किया जा रहा है।

घाटे के बावजूद निजी बस मालिक दूरदराज के इलाकों में बसें चला रहे हैं। सरकार द्वारा उन्हें बढ़ावा देने के बजाय उन पर बोझ डाला जाता है। लक्ष्मी ने निजी कंपनियों को रियायतें देकर टाइप-2 चलाने का मौका दिया है। इसी तरह, अगर निजी बस मालिकों को मौका दिया जाता है, तो वे विरोध नहीं करेंगे, यूनियन ने कहा। दशर के दौरान दक्षिण और पश्चिम ओडिशा में निजी बस सेवाएं 24 घंटे बंद रहीं; इसका असर निश्चित तौर पर आम जनता पर पड़ेगा. इसके बावजूद प्राइवेट बस ओनर्स एसोसिएशन ने शाम 7 बजे से 8 बजे तक 24 घंटे के लिए बस सेवा बंद करने का ऐलान किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023